SHREE SWAMINARAYAN

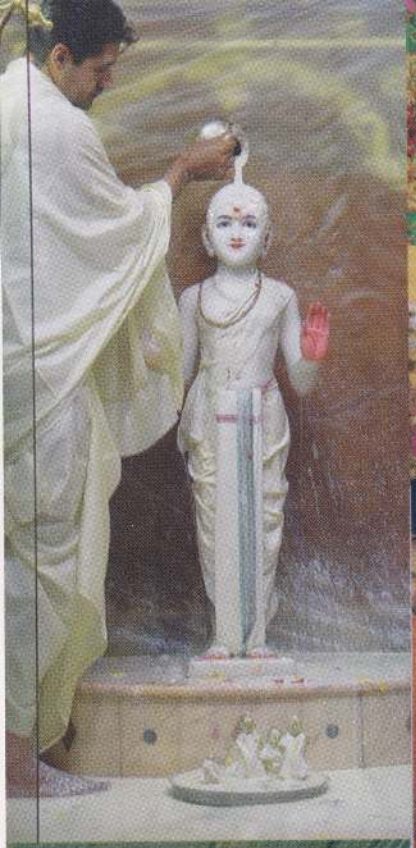
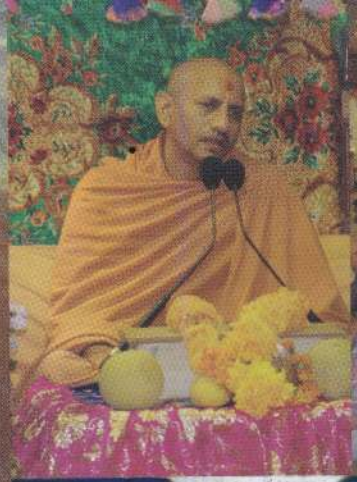
શ્રી સ્વામિનારાયણ

AUGUST 2005

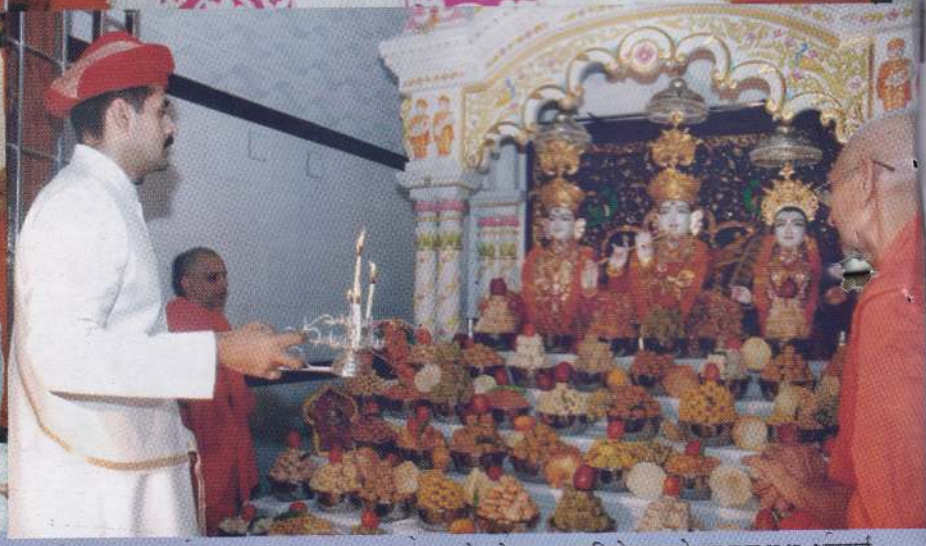
પ.પૂ.ભાવિ આચાર્ય લાલજી
શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો
૮ મો પ્રાકટ્યોત્સવ



પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





. विल्सडन लेन (यु.के.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में दशाब्दि महोत्सव प्रसंगे पर श्री घनश्याम महाराज का शोडषोपचार महाभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य हाराजश्री । २. विल्सडन लेन (यु.के.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में कथामृतपान कराते हुए स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अहमदाबाद महंतश्री) ३. हरिद्वार दिर सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में रखने के लिए गुरुपरंपरा से मिली हुई प्रसादी श्री चरणारविंद अर्पण करते कोठारी वामी स्वयंप्रकाशदासजी । ४. हरिद्वार मंदिर में विष्णुयाग की पूर्णाहुति करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ प.भ. श्री लक्ष्मणभाई भीमजी राघवाणी

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ अगस्त -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	सप्तम आचार्यश्री के मुख से आर्शीवचन	५
४.	साधवो हृदयं मम	६
५.	जन्माष्टमी	९
६.	भूकंप पूर्व भुज में पूर्व आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा का दिव्य दृश्य अनोखा इतिहास बना गया	१०
७.	भगवान हुए सभी के	११
८.	जीव के उद्धार के लिए हरिस्मरण जप पारसमणी	१२
९.	सत्संग सुरभि - शूरवीरता का सागर	१३
१०.	वाणी का श्रृंगार ही सच्चा श्रृंगार	१५
११.	भगवान सभी एक जैसे	१६
१२.	सत्संग समाचार (१) विशएष नियम वेशेष कृपा (२) हरि का मार्ग शूरवीर का	१८
१३.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

आषाढ मास का प्रारंभ अर्थात् भक्तों तथा किसानों में आनन्द की लहर । गुरुपूर्णिमा के उत्सव के दिन समस्त श्री नरनारायणदेव के आश्रितों ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के स्थान पर भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजका वेदपरंपरागत ढंगसे पूजन-अर्चन करके गुरु ऋण चुक्ता किया । चातुर्मासका प्रारंभ हो गया है । भगवान को प्रसन्न करने के लिए, भजन-भक्ति के नियम द्वारा अलौकिक आनंद आवे तथा जगत के किसानों को सुन्दर वर्षाऋतु में अपना खेत हराभरा हो जिससे पशुओं को हरीभरी घास खाने को मिले, सुखी बने । वर्ष का आनंद पशु-पक्षी सभी को मधुर लगता है कारण यह कि सभी को उसी से भरण पोषण तथा सुख शांति का अनुभव होता है । इसी प्रकार भक्तों को चातुर्मास में विशेष नियम धारण करके श्रीहरिकी शरण में जाने से परमानंद की प्राप्ति होती है । वास्तविक सुख शांति परमकृपालु परमेश्वर की प्राप्ति में है । अन्यत्र कहीं भी नहीं है । शिक्षापत्री में श्रीहरि की आज्ञा है । हमारे आश्रित मात्र चातुर्मास में विशेष नियम धारण करे -

विष्णोः कथायाः श्रवणं वाचनं गुणकीर्तनम् ।
महापूजा मंत्रजपः स्तोत्रपाठः प्रदक्षिणा ॥७७॥
साष्टांग प्रणतिश्चेति नियमा उत्तमा मताः

इस प्रकार आठ नियमों में से अवश्य एक विशेष नियम धारण करना चाहिए, जिससे श्रीहरि को प्रसन्न किया जा सके इसके अलांवा अन्य कोई सरल साधन मोक्ष के लिए नहीं है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जुलाई - २००५

८. प.भ. नारायणभाई नाथुभाई चौधरी के तुलसी बंग्लोज में पदार्पण, सोलागांव ।
प.भ. अमृतभाई एस. पटेल (विहारवाला) के कौशलेन्द्रगार्डन झूला में महापूजा प्रसंग पर पदार्पण (शाहपुर) ।
प.भ. भद्रेशभाई अमृतलाल दरजी के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।

१०. प.भ. विरेन्द्रसिंह सिसोदीया (अमदावाद मंदिर के केशियर) के पुत्र लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, अंबावाडी ।

१३. प.भ. हरिकृष्णभाई कनैयालाल जानी के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण - साबरमती ।

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट यज्ञशाला का उद्घाटन तथा ब्राह्मण बालकों को यज्ञोपवीत विधि प्रसंग पर पदार्पण ।

१५. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड. कोलेज तथा प्रार्थना होल की खातविधि प्रसंग पर पदार्पण, श्री स्वामिनारायण आश्रम - आबुरोड ।

१८ से २९ जुलाई लंडन विल्सडनलेन मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर तथा ईन्गलेन्ड के अपने अन्य मंदिरो में सत्संग सभा में पदार्पण इत्यादि प्रसंग आपके सांनिध्यमें संपन्न ।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में प.पू. लालजी श्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज के ८ वें जन्मोत्सव को अपने शुभ उपस्थिति में संत हरिभक्तों ने धूम धाम से सम्पन्न किया ।

सभी सत्संगी को जरुरी सूचना

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्पष्टता पूर्वक अपने सभी आश्रितो को आज्ञा की है की अपनी आमदनी का दशवा भाग अपने देश विभाग के आधार पर अपने देश विभाग के देव को अर्पण करना चाहिए ।

केवल संस्थाये, गुरुकुल या मंदिरो का निर्माण तथा किसी भी स्थान में दान करना हो तो धर्मादा में कमी करके दान नही देना चाहिए । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के आश्रितोको श्री नरनारायणदेव के कोठार में ही अपना धर्मादा (रुपया, अनाज इत्यादि) जमा कर प्राप्ती रशीद जरुर से प्राप्त करले ।

सर्वावतारी श्रीहरि की ईच्छा से अपना संप्रदाय देश विदेश में बहुत विस्तृत और व्यापक बनता जा रहा है । दाताओ कई बार कहाँ दान देना वो पता नही रहेता इसलिए दान का प्रवाह दूसरी संस्था की तरफ मुड गया है । इसलिए दाताओ को सूचन है की दान के लिए योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से प्राप्त कर योग्य जरुरत वाले मंदिर, संस्था, गुरुकुल इत्यादि को मिले ।

परम पूज्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पीठ स्थान से निवृत्ति बाद सर्व प्रथम अमेरिका की धर्मयात्रा

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव पीठस्थान के छठ्ठे श्रीहरिके अपर स्वरूप प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज संप्रदाय के सर्वोच्च पद श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान से निवृत होने के बाद अपने दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" के भव्य निर्माण में सतत प्रवृत्त रहते हैं । इसके अलांवा अन्य कार्यक्रम गौड कर दिये हैं । फिर भी विदेश में रहने वाले हरिभक्तों ने फोन, पत्र द्वारा प,पू. महाराजश्री को प्रत्यक्ष दर्शन हेतु निरंतर विन्ती करते रहते हैं । अमेरिका के I.S.S.O. के अलग-अलग चेप्टरो में रहते हरिभक्तं का अतिआग्रह भरा आमन्त्रण तथा उन सभी को श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में सेवा सहयोग की इच्छा अधिक होने से ता. १९-८-०५ से १०-९-०५ तक प.पू. महाराजश्री तथा बहनों के हार्दिक आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवाला तथा संत एवं पू. महाराजश्री के सेवक अमेरिका की धर्मयात्रा में पधार रहे हैं । जिसके कार्यक्रम की रुपरेखा नीचे अनुसार है -

१९	ओगस्ट, लोस एन्जिलस (केर्लोफोनिया) आगमन ।
२०-२१	लोंस एन्जिलस में अपने मंदिर में जाहीर सभा में तथा प.भ. नटुभाई पटेल की सुपुत्री के शुभ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु उपस्थित होंगे ।
२३	सानहोजे में पदार्पण ।
२४	सोल्टेबेक सीटी में पदार्पण ।
२५	ह्युस्टन आगमन ।
२६-२७	ह्युस्टन अपने मंदिर में सत्संग सभा तथा अन्य धार्मिक कार्यक्रम ।
२८-२९	डिट्रोईट अपने मंदिर में सत्संग सभा आदि कार्यक्रम ।
२९-३०	कालिवलेन्ड पदार्पण ।
३१-१	सप्टेम्बर, बोस्टन अपने मंदिर में सत्संग सभा इत्यादिक कार्यक्रम ।
१	सप्टेम्बर, बोस्टन से न्यूजर्सी (विहोकन)
२	विहोकन अपने मंदिर में सत्संग सभा तथा अन्य कार्यक्रम ।
३-४	एडिसन कोलोनिया अपने नवनिर्मत मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
५-६	विहोकन न्युजर्सी मंदिर में पदार्पण ।
७-९	शिकागो अपने मंदिर में सत्संग सभा आदि कार्यक्रम में निर्माण में सहयोग देने वाले सत्संगियो का सन्मान ।
१०	सप्टेम्बर भारत आगमन ।

अमेरिका के उपरोक्त स्थलो पर रहते हरिभक्तों को प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री दर्शन-आशीर्वाद के सुख के साथ श्री स्वामिनारायण म्युझियम के भव्य निर्माण में सेवा करने का उत्तम अवशर मिलेगा। इससे हरिभक्त लोग प.पू. महाराजश्री के आशीर्वाद के साथ प्रसन्नता प्राप्त करके धन्य भागी बनेंगे ।

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के सप्तम आचार्यश्री के मुख से आर्शीवचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

महाराज कहते कि हम जहाँ-जहाँ मूर्तियों की प्रतिष्ठा करते हैं या आने वाली परम्परा में जो आचार्य मूर्तियों की प्रतिष्ठा करेंगे उसमें मैं नित्य निवास करुंगा । हरिमंदिरोमें भी जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा आचार्य महाराजश्री करेंगे उसमें भी मैं नित्य विराजमान रहूँगा । इन मूर्तियों को जो भेंट सौगत-अलंकारादि अर्पित करेगा और जैसे भक्तजन मेरी सेवा पूजा करतें हैं उसी तरह आचार्य की करेंगे तो हम उन्हे अक्षरधाम में लेजायेगें । अपने गाँव में मंदिर बनाकर उसमें आचार्य द्वारा मूर्ति की प्रतिष्ठा कराना । आचार्य को भी हमारे जैसा ही पदार्पण कराना। इसलिये की दोनो आचार्य मेरे स्थान पर प्रतिष्ठित हैं । इन्ही के माध्यम से हम आप सभी की सेवा स्वीकार करेंगे । इनकी सेवा में हमारी सेवा है, उनकी पूजा में हमारी पूजा है, इन की प्रसन्नता में हमारी प्रसन्नता है, इसलिए इनकी सेवा पूजा करना यही हमारी आज्ञा है । नंद संत स.गु. प्रसादानंद स्वामी द्वारा लिखी यह बात है ।

अपने इष्टदेव के इन शब्दों पर जिसे विश्वास है उन्हे वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का दर्शन हो, स्पर्श हो या उनके मुख से आर्शीवचन सुना जाय तो श्रीजी महाराज ही प्रत्यक्ष आर्शीवचन दे रहे हैं । श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित सिद्धान्त वाले सत्संग में जिसे दिव्य बुद्धि हो उसे संप्राप्ति होती है । वर्तमान महाराजश्री में जिन्हे श्रीजी महाराजकी प्रत्यक्षता का ज्ञान नहीं होता वे ईर्ष्या की आग मं जलते रहते हैं । कहीं उन्हे शांति नहीं मिलती । अब यहाँ विराटनगर ओढव की सभा में प्राण प्रतिष्ठा के अवशर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वचन प्रस्तुत करते हैं ।

जगत का जीव प्रसन्न हो, माँ-बाप, बेटा, मित्र सगे सम्बन्धी सभी प्रसन्न हो तो हमें क्या देगे ? प्रशंसा करे मेरे माता-पिता-मित्र सगा संबंधी बडे अच्छे है, कुछ प्रसन्न हों तो वस्तु भेंट में देते हैं । भगवान प्रसन्न हो तो क्या देते हैं ? भगवान प्रसन्न हों तो मोक्ष देते हैं । जगत के संबन्ध का ठिकाना नहीं, थोडा भी उल्टा पल्टा हो जाय तो सभी प्रतिकूल हो जाते हैं। जगत का संबन्ध बहुत छोटा है । एक पढे हुए मनोचिकित्सक का वाक्य है, दुष्मन बनाने से पहले मित्र बनाना अनिवार्य है प्रथम जो मित्र होगा वह बाद में दुश्मन हो जायेगा । जगत में सम्बन्ध होते हैं और टूटते हैं । शाश्वत संबन्ध केवल भगवान के साथ है । भगवान का सुख आवे तो दूसरे सुख न्यून हो जाते है । नंद संतो ने कीर्तन गाया है "व्हाला ए रसना चरवणहार छास ते नव पीवे रे लोल" । जागतिक सुख नाशवंत है, जो आने जाने वाला है ।

बात ऐसी थी कि भगवान प्रसन्न हो तो क्यां देगें ? अच्छे विचार, कल्याण के विचार तथा अनंत विचार देंगे । संत हरिभक्तों की सभा में एकबार महाराज ने पूछा, संतो ! आप को विचार की तरंग आती है । किसी को ऐसा होता है कि आज दो लडु अधिक खाना है, मंदिर नहीं जाना है, बहुत प्रकार के विचार आते है । महाराज सामने विराजमान हों इसलिए कैसे कहा जाय नहीं महाराज आप मिलें है इसलिए दूसरे विचार नहीं आते । उसी समय मुक्तानदं स्वामीने मुठ्ठी में धूल भर कर कहा महाराज ? इस मुठ्ठीमें जितने रजकण हैं उतने विचार आते जाते हैं । महाराज ने कहा मुक्तानंद स्वामी सही कह रहे हैं । अनेक विचारों का आदान-प्रदान होता ही रहता है । मंदिर जाऊं, माला फेरु, यह करुं, यह न करुं, अच्छे विचार भी आते हैं । परंतु संग यदि खराब हो तो उत्तम विचार भी नष्ट हो जाता है । संग यदि उत्तम हो तो विचार बलवान बनता है । पांच मिनट महाराज के सामने देखते रहिये, पांच मिनिट महाराज का नाम लेते रहिए, दो घडी मंदिर की कथावार्ता में बैठिये । जितना संगति को बढायेंगे उत्तना विचार उत्तम होगा । उत्तम

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ८

साधवो हृदयं मम

- साधु घनश्यामप्रकाशदास (महंत स्वामी नारायणघाट)

संत भगवान के धूमते फिरते घर है। संत सभी गुणों के धाम हैं। संत परोपकार की पर्व है। संत मुमुक्षओं के अन्तर शुद्ध करने की मार्जनी हैं। संत कल्याण के आश्रय स्थान है। संत निर्व्याज आनंद के स्वरूप है। संत निर्मीत पवित्रताकी मूर्ति हैं।

ऐसे संत की पहचान कराते हुए भगवान स्वामिनारायण ग.प्र. ४४ वे वचनामृत में कहते हैं कि "सत्पुरुषों का संग ही परमात्मा में प्रीति कराने का दृढ आश्रय स्थान है। संत का मात्र समागम या दर्शन करने से सम्पूर्णता नहीं होती। परंतु देह तथा देह के सम्बन्धियों के साथ जैसी दृढमित्रता होती है वैसे ही दृढ मित्रता सच्चे संत के साथ हो जाय तो परमात्मा में प्रीति होते समय नहीं लगता। ऐसे सच्चे संत की पहचान कहते हुए महाराज आगे कहते हैं कि, जब तक देह को अपना रूप मानते हैं तब तक उसकी सभी समझ वृथा है। जब तक मान- प्रतिष्ठा को लेकर फिरेंगे तब तक उसमें साधुता नहीं आती। इसलिए देह तथा देह के सम्बन्धियों के अहं ममत्व का परित्याग करके स्वयं की आत्मा को ब्रह्मरूप मानकर, सभी वासना का त्याग कर जो अपने धर्म में रहकर भगवान का भजन करता है वही साधु कहा जाता है। जिसकी साधुता गयी उससे भगवान का कोई सम्बन्ध रहता नहीं है। जो सच्चे हैं उनके दर्शन में भगवान के दर्शन का फल मिलता हैं। ग.प्र. ५३ में कहते हैं कि बडे जो साधु हैं उनका अवगुण लेतो वह घटता जाता है। जो भगवान की भक्ति करते हैं उसके अंग बढते जाते हैं। इसलिए साधु का अवगुण नहीं लेना चाहिए। यहाँ महाराज रेड सिग्नल दे रहे हैं। मुनाफे का धंधा करना हो, मोक्ष के मार्गपर आगे बढना हो, अक्षरधाम की तरफ गति करनी हो, तो सदा द्रोह या उनके अवगुण मत देखो। यदि उनका अवगुण लें तो गांठ का गोपीचन्द भी चला जायेगा। अधःपतन होगा और चौरासी लाख योनीयों में प्रकटना पडेगा। ऐसी प्रेरणा है महा प्रभु की। इसके बाद ग.प्र. ५४ वे में "स्वधाम ज्ञान, वैराग्य तथा माहात्म्यज्ञान, इससे युक्त होकर भगवान की भक्ति करना चाहिए। जिससे धर्म का पोषण हो सके। साधु के साथ सतसंग करके मोक्ष के मार्ग पर सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। यही बात कपिलदेव भगवान स्वयं माता देवहूति से कहते हैं

प्रसंगमजरंपाशंमात्मनः
कवयो विदुः।
स एव साधुषु कृतो
मोक्षद्वार मापावृतम् ॥

जैसे जीव को अपने सम्बन्धियों के लिए प्रसंग दृढ होता है, वैसा ही भगवान या संत के प्रति हो जाय तो उस जीव के मोक्ष का द्वार खुल जाता है। अनंत कोटि के अधिपति भगवान ने सरल उपाय बताते हुए कहते हैं कि यदि मोक्ष की चाहना हो तो एकांतिक भक्ति को दृढ करके साधु की शरण में जाना चाहिए। अर्थात् गाय के पदचिन्ह की प्रदक्षिणा में सम्पूर्ण पृथ्वी को प्रदक्षिणा हो जाती है। ग.अ. ११ वे वचनामृत में इस प्रकार की चर्चा करते हुए कहते हैं कि ऐसी स्थिति आने पर बिना निर्विकल्प समाधि के भी निर्विकल्प समाधि का सुख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि भगवान अपने स्वरूप का सम्पूर्ण सुख साधु के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया हैं। इसीलिए तो स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने गीत गाया है।

संत जाडजो मारी मूर्ति रे,
एमां फेर नथी एक रति रे,
हूं संत ने संत ते वणी हूं रे,
एम श्रीमुखे कहे भगवंत रे

गढडा प्र. ५५ वे वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं यदि कोई बडे महापुरुष की सेवा में रहता हैं तो उसका सभी पाप नष्ट हो जाता है। एक समय वडताल का उत्सव करके संतो का संघ सोरठ गाँव के लिए पैदल चलकर आ रहा था।

रात्रि में धोलेरा मंदिर में रुके। वहाँ के महंत उपेन्द्रानंद स्वामीने संघ का स्वागत किया। गुणातीतानंद स्वामीने पूछा, क्यों साधु राम अंदर से सुखी तो हो न? यह सुनकर घबडाकर पाँव पकड लिया और कहा, "स्वामी संकल्प

विकल्प तो बहुत हो रहा है । इसके साथ अंत: शत्रुओं का प्रकोप बढा हुआ है । सुख नहीं मिलता हैं । शांति मिले ऐसा आप करोना ? आप मेरे साथ जूनागढ आईये तो ही शांति मिलेगी । स्वामी उपेन्द्रानंद महन्ताई की चाहना को छोडकर स्वामी के साथ निकल पडे । जूनागढ आकर स्वामीने सेवास्मी औषध को बताते हुए कि ऊपर की दालान में गोबर लीपना है । वृद्ध संतो की इतनी सेवा करोगे । सद्गुरु के अर्द्धवचन को सुनते हुए है सेवा करने लगे । अभी तो मात्र आधाएक दालान का लिम्पन हुआ । उधर नीचे से स्वामीने आवाज दिया । "स्वामी कहाँ तक पहुंचे ? बाहर जवाब देने के लिए गर्दन किये कि स्वामी के साथ आँखो में आँख मिली और संत की कृपा से शांतिका अनुभव हो गया । आँखो में से चिनगारी निकली और अन्धकार नष्ट हो गया और वहीं पर प्रकाश का उदय हो गया । यही प्रताप है अच्छे संत का । संत क सेवा का परिणाम तो फल के स्म में सभी को मिलता है । आनंदानंद स्वामीने पूछा कि "पूर्व का संस्कार यदि मति न हो तो कैसे टल सकता है । बाद में श्रीजी महाराज ने का जो अतिशय बडा हो पुस्म हो उनकी भी यदि कृपा हो जाय तो कितना भी मिलन संकार हो वह नष्ट हो जाता है । बडे पुस्म की कृपा हो गयी हो तो रंक राजा हो जाता है । चाहे तो भी प्रारब्ध में हो वह सभी अच्छा हो जाता है । विध्न आने वाला हो तो नाश हो जाता है । (ग.प्र. ५८)

एक हरिभक्त स.गु. गोपालानंद स्वामी की गोद में बालकको रखने के लिए आग्रह किया, स्वामी तीन-तीन पुत्रियों के बाद महाराज ने एकबालक को दिया, लेकिन यह बालक अपनी मां का दूध पीता ही नहीं है । कितने दिन दूध पीये बिना जी सकेगा ? इसलिए आप दया करके इसको उबार लो । स्वामी निर्निमेष दृष्टि से बालक को देखने लगे और मर्मवाली बोले । यह वृद्धावस्था में मरने के समय बहू के गर्भ से पैदा होने के लिए मलिन विचार किया जिससे तीसरे बार पेट में आया है । परंतु भगवान की दया से पूर्व जन्म की स्मृति होने से दूध पीने में शरमाता है । अच्छा रोटी ले आओ बालक के मस्तक पर तिलक चन्दन करदूं, दूध पीने लग जायेगा । "इस सन्दर्भ में कवि देवानंद ने गाया है, कि :-

अति मोटा पुस्म ने आशरे रे,
बणे पूर्व जन्म ना पाप
अंतकाले सद्गुरु नहिं कोई यु रे

लेकिन श्रीहरि कहते हैं कि बडे पुरु, की प्रसन्नता हो जाने पर रंक राजा बन जाता है । जूनागढ में एक समय स.गु. गुणातीतानंद स्वामी संतो के साथ दामोदर कुंड से आगे श्रीजी महाराज के प्रसादी का नारायण धरो है वहाँ पधारे थे । ठन्डी का समय कुंड में स्नान करने से स्वामी की शरीर ठन्डी होने लगी स्वामीको कांपते देखकर संतोने तपनी तैयार किया । जंगल में से लकडी एकत्रित करके अग्नि प्रज्वलित किया । एकबालक अपनी मा के कहने पर जो जंगल से लकडी ला रहा था । बिना पैसे के लकडी देदी और आशीर्वाद मांगा । उसी लकडी को संतने तपनी प्रज्वलित किया । थोडी गरमी मिलने के बाद गुणातीतानंद स्वामी की दृष्टि उस कठियारे पर पडी स्वामीने कहा - ईसे पैसे देकर प्रसन्न कर दो । यह सुनकर कठियारोने कहा - मेरी मां ने पैसा लेने के लिए मना किया है । परंतु आशीर्वाद मांगने के लिये कहा है । इसलिये आप आशीर्वाद दे दीजिए । यह सुनकर स्वामी बहुत प्रसन्न हुए और कह कि - तुमने मेरी ठन्ढी दूर की है, इसलिये अब तूं लकडी नहीं काटेगा । लडका आशीर्वाद को समझ नहीं पाया लेकिन संतो की सेवा से सन्तुष्ट होकर मां के साथ गाँव की तरफ चलता हुआ ।

प्रतिदिन की तरह जंगल में से लकडी काटकर मस्तक पर रखकर बाजार में बेचने के लिए वह चल दीया । आज बाऊद्दीन का कंवरी नहीं थीं । इसलिए लकडी कम थी, लेकिन लकडी चाहने वालो की संख्या बहुत थी । उसी समय संयोगवश जूनागढ के नवाब की सवारी निकली, नगरजन उसे देखने के लिए अपनी अटारियों पर चढ गये । इधर लकडी बिकने के बाद खाली होकर बाऊद्दीन की बहन भी अंटारी पर चढकर बादशाह को देखने लगी । उसी समय अम्बाडी पर बैठे बादशाह की नजर उस कन्या पर पडी । उसे स्म यौवन से युक्त देख़कर नवाब का मन मुग्ध हो गया । जिससे नवाब ने बजीर को बुलाकर उस कन्या की जानकारी के लिए कहा । सायंकाल

मा-बेटी को नवाब राजमहल में बुलाकर कन्या के साथ निकाह पढने का कहावा भेंज दिया । मां-बेटी को स्वप्न में भी यह विचार नहीं आया रहा होगा । यह तो परमात्मा ने छप्पर फाडकर कृपा दृष्टि की थी । दूसरे दिन ही नवाब के साथ कन्या का निकाह हो गया । इधर बाऊद्दीन साला बनकर नवाब का दीवान बन गया । परंतु बाऊद्दीन अपने दीवान खंड में एक शीशे में कुल्हाडी तथा कांवर को सजागर रखवा दिया और उससे लिखवाया कि - मेरी नसीब में तो लकडी काटना ही लिखा था, लेकिन स्वामिनारायण के संत गुणातीतानंद स्वामी की दुआ से मैं दीवानपद को प्राप्त कर लिया । इसके बाद वह अपनी यादीगीरी के लिये उसने अपने नाम की कोलेज बनवाई । जो आज भी जूनागढ में बाऊद्दीन कोलेज प्रसिद्ध है । समर्थ संत की कृपा से रंक राजा हुआ यहां उसका ज्वलंत उदाहरण है । इसके अलावां अत्यन्त खराब प्रारब्ध वाला वालिया भील को नारदजीने प्रेरणा दी और वह भारतीय संत परंपरा में वालिया से वाल्मीकी ऋषि जैसा तेजस्वी सितारा की तरह आज भी चमक रहे हैं । इसी तरह अजामिल मुसलमान स्त्री के साथ लग्न किया तो सम्पूर्ण जीवन पापाचार में बिताया । अपने नूर मोहम्मद आदि तीन संतानो के बाद चौथे पुत्र के जन्म समय नारदजी की भेंट हुई और उसकी आंख खुल गयी जिससे चौथे पुत्र का नाम उसने "नारायण" रख दिया । परिणाम स्वरूप अन्त समय में उसी नाम का स्मरण होने से यमदूतों की चाहना तथा यमलोक जाने से बच गया । इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि संत की महिमा का कोई अंत नही है । निष्कुलानंद स्वामी ने भक्त चिंतामणी में गाया है - कि

संत कृपा से सुख उपजै, संत कृपा से सरै काम ।
संत कृपा उषामिये, पुरण पुरुषोत्तम धाम ।

सर्वोपरि श्रीजी महाराज के पांचसौ परमहंसो की तरह उन्हीं के अपर स्वरूप धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहने वाले संतो द्वारा हमें भगवान की पहचान होती है । यथार्थ में वही संत हैं ।

पृष्ठ ५ से आगे

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के सप्तम आचार्यश्री के मुख से आर्शीवचन

विचार आने लगे तब समझना चाहिए की महाराज अब प्रसन्न हो रहे हैं । धर्म संबंन्धी कार्य तत्काल करना चाहिए ।

इसका अर्थ यह नहीं कि दानादिक ही तत्काल करना, बल्कि भगवान के साथ मिलने की बात आवे, तो तत्काल विना विचार किये हुए उसमें लग जाना चाहिए । थोड़ा-थोड़ा नित्य का क्रम करना चाहिए । मकान-दुकान-व्यवहार कहीं न कहीं तो सभी का संबन्ध है ही । परंतु Main plug भगवान के साथ संबन्ध जोडने के लिए रिक्त रखना चाहिए । मेन प्लग भगवान के साथ जुडे तो जगत निरर्थक लगे तो क्या होगा ? हिमालय में चले जाने की बात नहीं है । परंतु भगवान का अनुसन्धान नहीं छोडना चाहिए । जितनी भगवान की भजन बढेगी उतना बेलेन्स बढता जायेगा । अपने इस बैंक बैलेंस को स्थायी रखने के लिये सतत टाईम मिलते ही जुडाने की बात है । इसीलिये तो मंदिर तथा सत्संग मिला है । मंदिर तथा सत्संग बहुत दुर्लभ है । भगवान तथा शास्त्रमें जीव को पिरोकर रखना चाहिए । गुरुप्रसाद स्वामी ने बड़ी अच्छी बात की कि मंदिर का उपयोग करना चाहिए । दो घडी भगवान के सामने बैठकर अन्तर्दृष्टि करना यह अनुभव की बात है । मंदिर हर समय भजन भक्ति का केन्द्र स्थान है । इसलिये जाना चाहिए । महाराज के साथ संबंन्ध दृढ करना चाहिए । जिसका जितना संस्कार होगा उत्तना ही उसका बडप्पन कहा जायेगा । वही करोड़पति-अरबपति है । पैसे का बैलेन्स लम्बा नहीं चलता । दो पांच रुपया कम कमाया जाय तो चिंता नहीं । भगवान, मंदिर, शास्त्रो में जुडकर रहना चाहिए । सत्संग रखना यही अपना सुख है, अपनी समृद्धि है । भगवान ही कर्ता-हर्ता है । इसी मंदिर में भगवान विराजमान हुए । दर्शनार्थियों का खूब मंगल हो ऐसी भगवान नरनारायणदेव के चरणों मे प्रार्थना ।

जन्माष्टमी

- स्वामी
पूर्णप्रकाशदास
(नारायणघाट)

"जन्म कर्म च मे दिव्यम्" भगवान के प्राकट्य को भक्त जन उत्सव के स्प में मनाते हैं । अजन्मा प्रभु माया से रहित होकर जन्मधारण करके मृत्युलोकमें आते हैं । लेकिन स्वयं दिव्य मूर्ति होने से माया से निर्लिप्त रहते हैं । जो जीव भगवान की शरणागति होता है उसे माया के बन्धन से मुक्त करके मृत्यु के पाश से उबारकर अमरत्व, शास्वत सुख परम धाम के निवासी बना देते हैं । ऐसे अलौक धाम की प्राप्ति हेतु भक्त लोग प्रभु के जन्म और कर्म की दिव्यता को समझने लगते हैं ।

भगवान श्री कृष्ण परमात्मा ने श्रावण वद अष्टमी को मध्यरात्रि में गाढे अन्धकार को चीर कर प्रकाश पुंज फैलाते हुए मथुरा के जेल में माता देवकी के दक्षिण कुक्ष से जन्म धारण किया । जागते को सुताते हुए सोते को जगाते हुए जेल में से बाहर आ गये और नंद यशोदा के घर पहुंचगये गोपबाल सखाओं के साथ तथा गोपियों के साथ रास खेलकर, आनन्द की लहर विखेर कर गोकुल को गोलोक बना दिया । राधिका के चित को चुशाकर मथुरा में कंश को मारकर द्वारिका की राजधानी को अपना बना लिया । विविध योद्धाओं के घमंड को चकनाचूर कर दिया और भक्तों के सहायक हुए । आठपट रानियों का पाणिग्रहण किया । बहन सुभद्रा का हरण कराकर अर्जुन के साथ पाणिग्रहण करा दिया । कौरव पांडवो के बीच मध्यस्थता करके महाभारत जैसे तुमुल संग्राम के दोहनमें श्रीमद् भगवद् गीता स्मी अमूल्य तत्व जगत को प्रदान किया। एक राजपाट पर खेली गयी सम्पूर्ण लीला वर्णन करने के लिये भगवान श्री वेदव्यासने श्रीमद् भागवत पुराण का संघटन कर दिया इस प्रकार श्रावण अष्टमी को जन्माष्टमी की प्रसस्ति देकर भक्तों के लिए युगोंतक नया सुख प्रदान किया है ।

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने एक अनोखा स्प दिया है । भगवान श्री कृष्ण के चरित्रों को अन्तर्मुखी बनाया है । एक अद्वितीय आध्यात्मिक स्पदेकर भव्यता तथा दिव्यता में चार चांद लगा दिया है । सर्वप्रथम राधिका सहित सभी गोप गोपिकाओं के अगाध प्रेम प्रवाह को रोका और एक स्त्री पुस्प के बन्धन में जकड दिया । वचनामृत ग.म. प्र. ४३ में ब्रह्मस्वामी प्रीति को. सभी में प्रदान करके भक्तिभाव में जोड दिया । महाभारत जैसे विश्वयुद्ध को अन्तर्मुखी लडाई में परिवर्तित करके वचनामृत ग.म्.प्र. ७८ में श्रीजी महाराज वर्णन करते हुए कहते हैं कि जैसे कुस्क्षेत्र में कौरव तथा पांडव आमने सामने तीर-बरछी, भाला, बन्दूक इत्यादि से लड रहे थे । जिसमें किसी के हाथ, किसी के पैर किसी के सिर इत्यादि कट कर रहे थे, ठीक यही स्थिति अपने अन्तःकरण में भी कुसंग स्मी पंचविषय वस्त्र बांधकर खडा है। इसके अलावा राजनीति के युक्ति का प्रयोग भी वचनामृत ग.म.प्र. १२ में अन्तःकरण की शुद्धि इन्द्रियों से अलग करके अपने जीवात्मा को लगाना चाहिए । वचनामृत ग.अ. ९ में संसार के जाल में रहकर भी विशिष्ट स्प अद्वैत भाव से अखंड सेवा की रीति को समझाया है ।

इस प्रकार भगवान स्वामिनारायण ने जन्माष्टमी आदि जन्मोत्सवों को संत-हरिभक्तों के जीवन के साथ ऐसा ओतप्रोत कर दिया कि आज भी सभी लोग जन्माष्टमी, हरिजयंती आदि को बडे उत्साह के साथ मनाते हैं ।

प्रिय भक्त जन यथार्थ स्प से जन्माष्टमी के उत्सव का दर्शन करना होतो मूळी धाम जाना होगा । जगप्रसिद्ध इस भव्य-दिव्य मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव के इस प्रांगण में जन्माष्टमी के उत्सव का लाभ-आनंद लेना हो तो जीवन का एक उत्तम लाभ लेने हेतु जन्माष्टमी के अवशर पर मूली मंदिर में दर्शन हेतु अवश्य पधारे ।

भूकंप पूर्व भुज में पूर्व आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा का दिव्य दृश्य अनोखा इतिहास बना गया

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

प्रत्येक मनुष्य का स्वयं का अनुभव होता है। कितनों के हृदय से देखे दृश्य मिट जाते हैं कितनों के स्मृति पटल में विद्यमान रहते हैं। जिसे अच्छे दर्शन हुए हों उसे स्मृति में अपार सुख प्राप्त होता है।

श्रीजी महाराज स्वयं भुज कच्छ में सात वर्ष तक विचरण किये थे। उनका सर्व धर्म समभाव सभी के हृदय को छूजाता था। श्रीहरि के मनुष्य लीला का यह सचोट उदाहरण था। जिससे पर धर्मीभी आकर्षित हुए बिना रहे नहीं। इतना ही नहीं उनके प्रति श्रध्धा के भाव होने लगा था। परिणाम स्वस्म उनके संपर्क में आये और मोक्ष के भागी बने।

शिक्षापत्री के २३ वें श्लोक में श्रीजी महाराज ने कहा है कि रास्ते में जाते हुए शिवालयादि मंदिर आवे तो उसमें प्रतिष्ठित देव का आदरपूर्वक दर्शन करना चाहिए।

श्रीजी महाराज सभी देवो के अवतारी होते हुए भी किसी देवका विरोध बिना किये मंदिरो में दर्शन करने जाते थे। भुज के कोट विस्तार के प्रायः सभी देव मंदिर श्रीजी महाराज के चरण रज से अंकित है। भुज में महादेव गेईट के बाहर कल्याणेश्वर महादेव का मंदिर है। वहीं पर स्वयंभू शिव लिंग भी है। मंदिर के सामने राजा शाही के समय की बावडी है। यह बावडी श्रीहरि की प्रसादी की है। श्रीहरि इस मंदिर में पूजन अर्चन किये है। भूज के अन्दर प्रवेश करते ही द्वारकाधीश का मंदिर है। यहाँ भी दर्शनार्थ स्वयं श्रीजी महाराज पधारे थे। इसी रास्ते से आगे जाने पर हाटकेश्वर मंदिर आया हुआ है। यहाँ भी श्रीजी महाराज दर्शनार्थ पधारे थे। वहीं से थोडा आगे जाने पर रघुनाथजी का मंदिर है, जहाँ रामानंद स्वामी की बैठक है। जो आज भी भूकंप में जर्जरित अवस्था में विद्यमान है।

२६ जनवरी २००१ को भूकंप में कोट के भीतर का अपना मंदिर तथा अन्य प्रायः सभी मंदिरो का नुकशान हुआ था। भगवान की असीम कृपा से मूर्तियो का कोई नुकशान नहीं हुआ। अपने देवो को भी कोट के बाहर अपने विद्यार्थीभवन के विस्तार में शास्त्रोक्त विधि से प्रतिष्ठित किया गया था। लगभग पचास करोड स्मये के खर्च से नूतन मंदिर का निर्माण हो रहा है।

श्रीजी महाराज द्वारा प्रस्थापित परम्परा को सभी आचार्यो ने स्वीकार किया है। सामान्य ढंग से जब भी आचार्य महाराजश्री भुज पधारते तब उनके स्वागतार्थ भुज के संत-पार्षद-हरिभक्त गाँव के बाहर तक जाकर स्वागत करते थे, आज भी वही परंपरा विद्यमान है। अपने पूर्वाचार्य पूज्य तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शोभायात्रा महादेव गेट के बाहर श्री स्वामिनारायण विद्यालय के पास धूम धाम से निकाली जाती। कच्छ के सत्संगी हरिभक्तों के चौबीस गाँव की रासमंडली, श्री स्वामिनारायण विद्यालय की बैंड पार्टी, विद्यार्थियों की लेजिम पार्टी, श्रीजी महाराज की दिव्य पालकी, श्रृंगारित मोर, बत्तक, मगर तथा अन्य आकृति से अलंकृत ट्रैक्टरो पर नाना विधशोभा का तथा आचार्य महाराजश्री का, संतो का, पार्षदो का दर्शन होता रहता था। पीछे-पीछे महिला वर्ग मंगलकलश के साथ मंगलगीत गाती चल रही थी। यात्रा के बीच में संत-हरिभक्त भगवान श्री स्वामिनारायण कि धुन बोलते चलते थे। शोभायात्रा में बीच-बीच में "सहजानंद स्वामी महाराजकी जय" बोलते चल रहे थे। शोभायात्रा का एकभाग महादेव गेट पर था तो दूसरा पुराने मंदिर तक पहुंच गया था। इस समग्र मार्ग पर आचार्य महाराजश्री के दर्शनार्थ लोगों की भीड एकत्रित थी। चातक दृष्टि से लोग देख रहे थे।

आचार्य महाराजश्री सर्व प्रथम श्रृंगारित ट्रैक्टर से उतरकर कल्याणेश्वर महादेवजीका दर्शन किये अभी उनकी शोभायात्रा कोट के भीतर प्रवेश करे कि सर्व प्रथण श्री द्वारकाधीश का दर्शन करके श्रीहाटकेश्वरजीका दर्शन किये और श्री रघुनाथजीका दर्शन

करके अपने मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव श्री राधाकृष्णदेव, श्री घनश्याम महाराज का भाव विभोर होकर दर्शन करके सभा मंडप में विराजमान होने से पहले संतोका कुशल क्षेम पूछे, इस समय आपश्री के मुख मंडल की आभा चमत्कृत हो रही थी। यद्यपि सभा में दो घन्टे बैठना होता है तथापि सभा से विसर्जित होकर उतारे पर आकर हरिभक्तों को दर्शन का लाभ देना, फिरभी मुख में थोडीभी मलीनता नही अपितु स्मित मुख से सभी को · जयश्री स्वामिनारायण का साधुवाद देना।

भुज में मंदिर कोट के बाहरी विस्तार में बन रहा है। जिसकी भव्यता निराली है। कोट विस्तार के अंदर के दिव्य शोभायात्रा का यह इतिहास अवश्य लिखा जायेगा। परंतु इस शोभायात्रा का जो दर्शनार्थी स्मरण करता है वह आनंदाश्रु से भरजाता है। कारण इतना कि इन शुभ दिव्य प्रसंगो में श्रीहरि सदा हमारे सन्मुख होते है।

भगवान हुए सभी के

- साधु प्रियव्रतदास

भगवान भक्तों के कब होते है। जब भगवान की कोई भक्ति करता है, उस समय वह एकात्मभाव से भगवान का ध्यान करता है और धर्माचरण करता है तब भगवान भक्त के हो जाते है। जैसे प्रहलाद भक्त भगवान का एकांतिक भक्त था। जब भक्त पर आपत्ति आई तब भगवान खंभे से निकल कर भक्त की रक्षा किये थे। इसी प्रकार उत्तम भक्त राजा अंबरीष एकादशी के व्रत की पारणा में दुर्वासा ऋषि को निमंत्रण दिये थे, लेकिन संयोग वश उन्हें आने में विलम्ब हुआ और इनके पारणा का समय निकल रहा था। इस लिये पारणा करने लगे, उसी समय दुर्वासा ऋषि आ गये और उन्होंने कहा कि मैं स्नान करके आऊँ पश्चात् पारणा करेंगे। लेकिन स्नान करके आने में विलम्ब हुआ और तुलसीपत्र से पारणा कर लिए। इस लिये क्रोधित होकर अम्बरीष को मारने हेतु क्रित्या पैदा किये। परंतु भगवान उनकी रक्षा में सुदर्शन चक्र छोडा जिससे क्रित्या जलकर राख हो गयी। बाद में सुदर्शन चक्र दुर्वासा ऋषि के पीछे हो लिया, किसी तरह रोकने पर रुका नहीं। दुर्वासा उससे बचने के लिए उपाय खोजने लगे। सुदर्शन चक्र से बचने के लिए वे शिवजी के पास गये और रक्षा की गुहार किये। परंतु शिवजी उन्हे विष्णु के पास जाने को कहा। दुर्वासा विष्णु के पास गये। विष्णुने बताया कि यह चक्र आप का नाश करेगा ही। यदि आपको बचना ही हो तो अम्बरीष के पास जाइये। और उनसे क्षमा मांगिये। दुर्वासा वापस उन्ही के पास गये और क्षमा याचना किये। अम्बरीषने सुदर्शन चक्र से प्रार्थना की कि आप भगवान के पास वापस चले जायेगा। और नाना विध स्तवन से प्रसन्न करके भगवान के पास भेंज दिया और दुर्वासा ऋषि की रक्षा हुई। अंबरीष को भक्ति तथा नम्रता देखकर ऋषि खूब प्रसन्न हुआ कि भक्त के अपराध को भगवान भी माफ नहीं करते। जब भक्त पर कोई आपत्ति आती है तब भगवान किसी भी तरह रक्षा करते हैं। किसी प्रकार का दुःख नहीं आने देते। यदि अपने जीवन में भगवान को नही रखेगें तो भगवान भी अपनी देख रेख क्यों करेंगे। परंतु हमें तो सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण मिले हैं। इसलिये हमे भी भजन करके अक्षरधाम की प्राप्ति कर लेनी चाहिए। भजन, भक्ति जितना बन सके उनता कर लेगी चाहिए। खाते-पीते-सोते-जगते, चलते-फिरते केवल स्वामिनारायण भगवान की भजन करते रहना चाहिए। इसका परिणाम अंत में जब शरीर से प्राण निकलेगा तो वही स्मरण होता रहेगा और अन्त का स्मरण ही मोक्षदायक होता है।

इसलिए हम सभी भगवान श्री स्वामिनारायण की प्रार्थना करें कि हे महाराज आज के इस कलियुग से हमारी रक्षा कीजिए। जिससे आपकी अधिक से अधिक भजन हो सके और दूसरों की इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा देसके। आप जिस प्रकार आगे आये ऐसा ही हम बन सके जिससे यह लोक तथा परलोक दोनो बने और हम सभी मोक्ष के अधिकारी बने। उस प्रकार की शक्ति प्रदान करें।

जीव के उद्धार के लिए हरिस्मरण जप पारसमणी

- डॉ. परेश गज्जर (पेथापुर)

हमारे सत्संगियों को चातुर्मास में विशेष निमय रखना चाहिए । जिसमें भगवान की कथा का श्रवण करना, भगवान के गुणों का कीर्तन करना, पंचामृत से भगवान का अभिषेक करना, भगवान के मंत्र का जप करना, स्तोत्र का पाठ करना, प्रदक्षिणा फिरना, साष्टांग दंडवत् प्रणाम करना ॥ शिक्षापत्री ७७-७८ ॥

भगवान स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों को चातुर्मास में अर्थात् देव शयनी एकादशी से देवोत्थान एकादशी तक शिक्षापत्री के ७७-७८ श्लोक में की गयी आज्ञा का अवश्य पालन करना चाहिए ।

भगवान के नाम में तन्मय बनेंगे तो अपने सभी पाप जल जायेंगे । जप करने से पाप जल जाता है । जिससे परमात्मा का दर्शन होता है। जप करने से मन प्रसन्न होता है । जब तक जप नहीं किया जायेगा तब तक पाप करने की आदत छूटेगी नहीं । केवल पुस्तक पढने से पाप से मुक्ति नहीं होती है । वासना की निवृत्ति भी नहीं होती है । पाप एवं वासना श्रीहरि का अखंड स्मरण करने से नष्ट हो जाती है । बार-बार जप करने से जीवन सुधर जाता है। स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है । अनेक जन्मो के पाप जल जाते हैं।

जब परमात्मा के नाम के साथ प्रीति हो जाती है तब भक्ति में आनंद आने लगता है । इसलिए करोडो काम छोडकर प्रभु का स्मरण करना चाहिए । कितने लोग घर का सभी काम करने के बाद प्रभु का नाम लेते है । सही तो प्रभु का नाम लेने के बाद ही घर का अन्य कार्य करना चाहिए । प्रभु के नाम की रटन करेंगे तो पाप अपने आप धुल जायेगा । पश्चात् हृदय में प्रकाश होगा और प्रभु के प्रति प्रेम का विस्तार होगा । कितना बड़ा क्यों न पापी हो लेकिन प्रभु का नाम स्मरण जप करता है तो निश्चित ही उसका बेड़ा पार हो जायेगा ।

नाम स्मरण करने से प्रभु अपने भीतर के अज्ञान को दूर करेंगे । मंत्र से आन्तरिक आत्मशक्ति बढती है । और परमात्मा का हृदय में दर्शन होगा । इसलिए निरन्तर जप करते रहना चाहिए । प्रभु के जप में इतनी शक्ति है कि अलभ्य कार्य भी लभ्य हो जाता है । प्रभु उसका सर्वस्व रक्षण करते हैं । इसलिए दिन में प्रभु के नाम का जप करो, रात्रि में सोते समय जप करो । रसोई खाते प्रभु के नाम का स्मरण करो तो भोजन करने वाले की बुद्धि निर्मल हो जायेगी । नारायण सरोवर के किनारे प्रचेताओं ने जप किया, भगवान उनके सामने प्रगट हुए और आशीर्वाद दिये । यही जप का माहात्म्य है । जीवात्मा को जब तक परमात्मा का साक्षात्कार नही होता तब तक परमात्मा का एकमात्र आसरा रखे तो निश्चित ही एक दिन उस जीव का कल्याण होगा । नाम स्मरण से खराब, अमंगल ग्रह भी मंगल फल देने लगते हैं । संकट टल जाता है । मुमुक्षु को चाहिए कि जप की संख्या क्रमशः बढाते रहना चाहिए । तेरह करोड जप करने से भगवान का साक्षात् दर्शन होता है ।

जप विधि में साधक को दो नियम का अवश्य ध्यान रखना चाहिए - (१) ब्रह्मचर्य (२) किसी अन्यका खाना नहीं । जप करने वाले को ज्ञान की प्राप्ति होती है । अर्थात् जप करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है । एक विशेष प्रकार की स्फुरणा होती है । इसल कलियुग में जीव का उद्धार के लिए मंत्रजप के सिवाय कोई अन्य उपाय नहीं है । निद्रां आने से पूर्व शयन करते समय जप करते रहने से अन्तः शत्रु परेशान नहीं करते । संसार में मन फंसता नहीं जब विकार वासना का उद्भव हो तो प्रभु नाम का स्मरण करने से व्यक्ति विकार रहित हो जाता है । परमात्मा के नाम प्रीति हो जाने पर परमपद की प्राप्ति हो जाती है ।

सत्संग सुरभि - शूरवीरता का सागर

-अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

काठियावाड में एक गुंदाली नाम का गांव है । उस गाँव के काठी परिवार मेंएक महिला हरिभक्त रहती थी उनको दो युवान लडके थे । बडा मामैया तथा छोटा महेरामण । माता का सत्संग संस्कार माय के का था । दो भाईयों में सत्संग का संस्कार भले ही कम रहा हो परंतु माता राणदेवी दोनो बेंटो को भगवान स्वामिनारायण का माहात्म्य प्रतिदिन समझाती थी ।

एक समय सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायण के संत दो दिन तक भूखे प्यासे घूमते फिरते गुंदाणी गाँव में आये । माताजी जानी की भगवान स्वामिनारायण के संत आये है । अत्यन्त प्रसन हो गयी और आग्रह पूर्वक संतो को रोक लिया । पवित्र आसन पर बैठाया बाद में ख्याल आया कि संत दो दिन के भूखे हैं । माताजी को बहुत दुःख हुआ । मेरे संत जिन्हे अक्षरधाम के धामी मिले है और जो जगत के जीवों का उद्धार करने के लिये रात दिन घूमते रहते हैं । ये दो दिन से भूखे हैं ? लेकिन मेरी अहो भाग्य कि संत मेरे यहाँ भोजन करेंगे तो मैं मानूंगी कि मेरे यहाँ स्वयं भगवान जिम रहे हैं । बाद में संतो को बर्तन-सीधा, सामान इत्यादि दिया और संतो ने भगवान का प्रसाद बनाकर भोग लगाकर स्वयं जिमने के लिए पत्तल में निकालते हैं उसी समय काल के समान दश-पन्द्रह लोग लाटी लेकर आ पहुंचे ।

खडे हो जाओ बाबा लोग ! गाँव से बाहर निकल जाओ, हमारे गाँव में कहाँ से आये ? संत तो मौन रहे लेकिन लाठी लेकर खड़े सभी गाली दिये जा रहे थे । बात ऐसी है कि गाँव में एक जगह डायरा हो रहा था, उसमें एक ने कहा कि अरे ! समाचार सुने हो ? गाँव में स्वामिनारायण का साधु आया है । लोगों का दारु एवं अफीण पीना बन्द करा रहा है । अपने गाँव को बिगाड देगा । बापू ? आपको तो रोज पीने को चाहिए । यदि स्वामिनारायण बाला यहाँ घुसा तो निश्चित ही बन्द करायेगा ।

यह सुनते ही बापू का दिमाक फिरा और कहने लगा कि ऐसा साधु अपने गाँव में नहीं चाहिए, उसे धक्का मारकर बाहर कर दो ।

बापू की आज्ञा पाकर ये द्वेषी माताजी के घर आ गये - और गरीब गाय की तरह उन संतो को मारा, संत विन्ती करने लगे कि हमें भोजन तो करलेने दो बाद में हम चले जायेंगे ।

माताजी घर से बाहर आकर कहने लगी कि ये संत तो हमारे घर मेहमान के स्प में आये हैं ।

द्वेषियों ने कहा कि बुढ्ढी तू भीतर चली जा नहीं तो तुझे भी मारेंगे । संतो के पात्र में अंजली भरभर कर धूल डाल दिया संत खडे हो गये । स्वामिनारायण का स्मरण करते हुए चले गये । वृद्धा यह सब देखती रही और गाँव वाले उन्हे लाठी और टोपली मारते हुए गाँव से बाहर कर आये ।

जिसकी भृकुटिमात्र से प्रलय होती है ऐसे ये समर्थ संत थे । फिर भी भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा थी कि कोई गाली दे तो भी उसे गाली नही देना बल्कि आशीर्वाद देना ।

संत मार सहन करके स्वामिनारायण - स्वामिनारायण बोलते हुए गाँव के बाहर चले गयें और टोला पुनः वापस आकर उसी प्रकारनसा में धुत्त हो गया । दोपहर का डेढ दो बज रहा था । खेत से

वृद्धा माता के दोनो बेटे आये और अपनी माता को रोते हुए देखकर पूछे कि क्यों रो रही तो माता ने कहा कि बेटों आज मेरे घर संत आये थे, भोजन की थाली लोगों ने छोड़ाकर मारते हुए गाँव से बाहर कर दिया । और वे लोग भूखे चले गये । भगवान स्वामिनारायण के संत थे । इस प्रकार की पवित्र भावना मां की देखकर बेटो ने कहा कि मां तूं आज्ञा कर इस समय हमलोग क्या करें ।

माताजीने कहा कि जाओं बेटों जिन लोगोंने संतो को मारा है उन्हे यह शबक सिखा कर आओ । एक भारतीय नारी अपने बेटों को समर्पित होने की शिक्षा देती है । परिणाम स्वरूप दोनो बेटे मां का आशीर्वाद लेकर जहाँ डायरा चल रहा था वहाँ गये और सभी को ललकारते हुए कहने लगे कि कौन मेरे संतो को मारा है । दरबार ने कहा कि मैंने मारा है । जैसे सिंह का बच्चा छलांग मारता है ऐसे ही मामैया छलांग मारकर कूदा और दरबार के पेट में भाला घोंप दिया । दरबार सदा के लिये सो गया । डायरा बन्द हो गया । दोनो घर आये । मां को कहे संतो का बैर हमने ले लिया अब क्यां करें ? मां ने कहा अब यहाँ रहना ठीक नहीं । तुम दोनो गढडा चलेजाओं । वहाँ श्रीहरि विराजमान हैं । यहाँ शत्रु फिर आयेगा । दोनो पुत्र गढडा के रास्ते पर चल दिये । लेकिन दुश्मन पीछे पड़ गये और ललकारने लगे । ये दोनों भी तलवार-भाला आदि अस्त्र लेकर मैदान मे कूद पडे और युद्ध हो गया जिसमें बहुत सारे लोग मारे गये । ये दोनों भी मर गये । उसी सम भगवान उन दोनो को दर्शन दने के लिये हाथ में घडा का पानी लेकर प्रगट हुए । दोनों के मुख में पानी की जल धार दिये और कहे कि मामैया ! तू मेरे संतो के लिये प्राण त्याग किया है अब तुम्हारे प्राण को रखूं या स्वधाम में लेजाऊँ । दोनो भाईयों की आंख में आंसू बहने लगा । महाराज अखिल ब्रह्मांड के अधिपति हैं वही आज हम सभी को लेने आये हैं । ऐसी मृत्यु पुनः नही मिलेगी । अब मरेंगे तो पता नहीं क्या होगा । आज तो प्रत्यक्ष श्रीहरि सामने खडे है और पानी पिला रहे हैं तो हे प्रभु ! अब जीकर क्या करना है ? अपने दिव्य धाम में लेजाइये ।

उसी समय श्रीहरि की आज्ञा से अक्षरधाम में से मुक्त लोग विमान लेकर आये । दोनो दिव्य शरीर धारण कर विमान में बैठकर परमात्मा के धाम में गये ।

"मेरे निर्धनी संतो को कोई परेशान करे और उस समय शूरवीर होकर कोई संत की रक्षा करे तो उसको लेने मैं खुद आता हूँ एवं उसे अपने धाममें लेजाता हूं ।

वळी संतोने कोई संताप रे,
निरामनी जाणी दुःख आपे रे ।
खोटां कलंक धरे संत शरे रे,
पापी आवे चडावे अचिर रे ।
तेनो पक्ष लई पोता माथे रे,
करे लडाई लबार साथे रे ।
एह पक्ष ना जेले नार रे,
जाय ते जन धाम मोझार रे ।

(श्रीपुरुषोत्तम प्रकाश)

शूरतावीरता के सागर मामैया एवं महेरामण दोनों ने संतो का पक्ष रखा और बलिदान दिया तो कृपाके सागर श्रीहरि स्वयं आकर अपने धाम में ले गये ।

यह जीवन कभी बोल कर बदल सकता है लेकिन श्रीहरि कभी अपने बचन को मिथ्या नही होने दिये ।

मामैया एवं महेरामण को तो सहीं में प्रभुका रंग लग गया था ।

मध्यप्रदेश में अपने बामरोली श्री स्वामिनारायण मंदिर में फोन की सुविधा उपलब्ध हुई है जो इस प्रकार है ।
(07532) 242285

वाणी का श्रृंगार ही सच्चा श्रृंगार

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

"आंख मां अमी तो दुनियां गमी, जीभमां अमी तो दुनिया नमी" वाणी और पानी को विवेक से खर्च करो। वाणी को पानीकी तरह सुरक्षित रखो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान उसकी वाणी से होती है । मधुर शब्द बोलने से व्यक्ति वश में हो जाता है । मधुर शब्द सुवर्णपात्र में हीरे के समान है -

यदा यदा मुञ्चति वाक्य बाणम् ।
तदा तदा कुल ज्ञाति प्रमाणम् ।

जब भी व्यक्ति बाणी बोलता है उसी से उसके कुल जाति का आकलन हो जाता है । इस लूली (जीभ) द्वारा बोली जाती हुई वाणी से मनुष्य के स्वभाव का ख्याल आ जाता है । अपनी रसना इन्द्रिय अर्थात् स्वादेन्द्रिय जिह्वा ऐसे तो विविध प्रकार के स्वाद को पहचानने का कार्य करती है, परंतु मनुष्य के अन्तःकरण की भावना को भी व्यक्त कर देती है । यदि वाणी मधु जैसी मीठी होतो सामने वाला व्यक्ति अवश्य झुकजायेगा ।

प्रायः मनुष्य समाज में मान-सन्मान-आदर-प्रतिष्ठा आदि की आकांक्षा रखता है । सन्मान प्राप्ति हतु शरीर का श्रृंगार करता है । सुंदर वेश-भूषा या वस्त्रालंकार धारण करता है । परंतु वाणी में कटुता या कडवाश होगी क्रोध होगा, तीक्ष्णता होगी, वाणी की कर्कशता होगी, तो किसी प्रकार का शारीरिक श्रृंगार मनुष्य को सन्मान-आदर या स्नेह नहीं दिला सकेगा । वाणी की कटुता व्यक्ति को तिरस्कार पात्र या उपेक्षा पात्र बना देती है ।

मीठाशवाणी बोलने से बदले में मीठाश भरा व्यवहार, मिलता है । वाणी मनुष्य का अमूल्य भूषण है । अमूल्य श्रृंगार है । भौतिक श्रृंगार प्रधान मानव शरीर की एक सुंदर शोभा का साधन बन सकता है, जिससे वह श्रृंगार करने वाला स्वयं को श्रेष्ठ मानने लग जाय, अहं भाव आजाय, परंतु ऐसे अहंकार का हेतु जो श्रृंगार वह व्यक्ति को सामाजिक व्यवहार में शोभास्पद स्थान दिला नहीं सकता है । इन आभूषणों की चमक दमक नश्वर है । इसका कोई मूल्य नहीं है । मनुष्य का सच्चा आभूषण तो मधुर वाणी है । यदि व्यक्ति "सुनृत वाक्य संपन्न" हो तो उसे किसी आभूषण की जरूरत ही नहीं होती । हितकारी - प्रीतिकारी, मंगलकारी, तथा प्रियवाणी, सत्य वाणी द्वारा ही उसे सभी प्रकार से भूषित करते हैं । अलंकृत करते हैं । इसलिए प्रत्येक मानव को चाहिए कि वाणी में मधुरता तथा मिठाश लाना चाहिए ।

वाणी शुद्ध हो, मधुर हो तो भी रस तथा रीति का अनुसरण करके आनंद देने वाली होती है । जैसे घास की पुतली अलंकार से युक्त हो तो भी रुचि पैदा नहीं करती, उसी प्रकार वाणी अलंकार युक्त होने पर भी रस के विना हो तो रुचि पैदा नहीं करती । जैसे कुलीन या पतिव्रता स्त्री अपने पति को नही छोडती, उसी प्रकार वाणी स्त्री देवी पुरुष को जन्म-जन्मान्तर तक नहीं छोडती है ।

वाणी की मधुरता के सिवाय दूसरी कोई वस्तु मधुर हो ही नहीं सकती । वाणी की कठोरता से किया गया उपकार सभी नाश हो जाता है । वाणी मंगल कामनाओं की जननी है । इसीलिए प्रिय वाणी को धीर मनुष्य "कामधेनु" कहते हैं ।

जैसे गुणवान तथा श्रृंगार युक्त सुंदरी अपने योग से रसिक जनो के चित्त को आकर्षित करती है, उसी प्रकार श्रृंगार युक्त तथा गुणियल वाणी अपने योग से रसिक जनों के अंतर्गत अभिप्राय को खींचलाती है, यही यथार्थता वाणी का रहस्य है । वाणी अनेक प्रकार के अलंकारो से युक्त होने पर भी यदि उसमें श्लेष अलंकार न हो तो हास्य निष्पन्न नहीं होता है । थोडे ही वर्णो से गूंथी गयी वाणी का अनेको अर्थ होते हैं ।

वाणी के संगीत स्त्री महासागर

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ११

भगवान सभी एक जैसे

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

सभी भगवान जहाँ भी हैं वे एक समान हैं। दर्शन से केवल मतलब।

यह सभी हिन्दू के भीतर प्रवर्तित रहता है। हिन्दू शास्त्रो में ३३ करोड देवता है। ८४ लाख योनियाँ है। सनातन हिन्दू धर्म में भगवान के अनेक स्वरूपों का वर्णन हैं एक सामान्य उदाहरण देखिये - संसार में जितने मनुष्य हैं वे क्या एक समान मिलते है, कही कोई भी एक दूसरे से कुछ न कुछ तो अवश्य अंतर होगा। ईश्वर द्वारा निर्मित मानव में एक दूसरे से भेद दिखाई देता है। लेकिन मानव जगत की रचना करने वाला परमात्मा तो एक ही है।

समग्र हिन्दू धर्म श्रद्धा तथा सदाचार पर निर्मित है। भगवद् गीता में श्रीकृष्ण भगवान कहते हैं ? जिसकी जैसी श्रद्धा वह वैसा प्राप्त करता है। देवों को पूजने वाला देवों का प्राप्त करता है, लेकिन मेरे भक्त मुझे प्राप्त करते हैं।

तुम मुझे पूजने वाला और मुझ में मनवाला बन।

मुझे ही नमस्कार कर। ऐसा करने से तूं मुझे ही प्राप्त करेगा। तुम्हारे सामने मैं सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ।

हे अर्जुन ! तुम सर्व भाव से प्रभु के शरण में जा। उनकी कृपा से परम शांति मिलेगी। परमतत्व मोक्ष प्राप्त होगा।

श्रीकृष्ण के वचनों से एक बात तो स्पष्ट हो रही है कि देव तथा भगवान अलग हैं। जिस परमेश्वर को प्राप्त करके बड़ी सरलतासे परमपद की प्राप्ति होती है। यही परमात्मा की प्रतिज्ञा है।

यहाँ एकबात बहुत स्पष्टता से समझनी चाहिए। शरणागति विना मोक्ष शम्भव नहीं। पहचान विना स्वरूप में निश्चय संभव नहीं. प्रत्येक मुमुक्षुको चाहिए की परमात्मा का निश्चय करके तथा उन्हे पहचान करके उनकी शरणागति हो जाना चाहिए। यही एकमात्र जीव के कल्याण कां मार्ग है।

परमात्मा तो अजोड है। कोई भी शास्त्र परमात्मा को दो रूप नहीं दिया है। एक ही है, अद्वितीय है। उन के समान कोई दूसरा नहीं, इससे अधिक भी कोई नहीं हो सकता है। प्रत्येक अवतार में इनके कार्यानुसार सामर्थ्य देखने को मिलता है।

भगवान के जितने अवतार हुए है वे सभी नारायण के अवतार हैं। फिर भी उन सभी में ऋषभ देव बहुत प्रिय थे। इसके बाद कपिलजी दत्तात्रेय एक समान हैं। इन तीनों अवतारों की अपेक्षा श्रीकृष्ण की तरफ मेरा प्रेम है। हम यह जानते हैं कि जितने अवतार हुए हैं उनमें यह अवतार समर्थ अवतार हैं। इसमें अवतार - अवतारी का भेद नहीं है। (लोया १४)

श्रीकृष्णावतार में भगवान ने सभी भक्तों के मनो भाव को पूर्ण किये हैं। श्रीजी महाराज कहते हैं कि इस अवतार में अवतार अवतारी भेद का भाव ही नहीं आता। एक समय श्रीजी महाराजने भी परोक्ष में बात की कि इस मार्ग में अनेक जीवों का पोषण होगा। इस हेतु से एक विशाल सत्संग का प्रबन्ध किया।

कल्याणार्थ तो भगवान ही सभी कर्ता हर्ता हैं जिस प्रकार भगवान के ही रामकृष्णादि अवतार हैं तथा नारद, सनकादि, शुकजी, जडभरत, हनुमान उद्धव इत्यादि परोक्ष जो साधु हैं वे सभी महात्म्य को जानते हैं। ऐसे परमात्मा को यदि इस तरह के महापुरुष जानते हैं तो उन्हे कोई शेष रहता ही नहीं हैं। (ग.म. २१)

महाराज ने कुछ छोडा नहीं है। यहाँ महाराज़ ने रामकृष्णादि को परोक्ष अवतार बताया है। जिस प्रकार परोक्ष के लिए जीव को प्रीति है, इसी प्रकार प्रत्यक्ष संतो में प्रीति हो जाय तो निश्चित ही उसका कल्याण समझना चाहिए।

हर समय भगवान तो एक ही है। सभी विशेषण हटाकर परम अनन्य स्वरूपों को एक दूसरे के साथ बराबरी करें तो पतिव्रता भक्ति में न्यूनता

कही जायेगी । "जगत के जीव" तथा "भगवान के भक्त" इन दोनों के बीच में बहुत अंतर है । इस में भी सत्संगी बनने के बाद सर्वोपरि श्री सहजानंद स्वामी अपने इष्टदेव है, इस लिये भगवान के भक्तों में अपना स्थान भी ऊंचा कहा जायेगा ।

भक्ति धर्म के पुत्र सहजानंद स्वामी है वही हमारे भगवान हैं । सभी अवतार इन्ही के है । ऐसा निश्चय करके अवतारों में न्यूनाधिक्य देखना - उसकी चर्चा करना यह सभी निष्ठा में कमी बताता है ।

कोई बडा संत या धर्मवंश के वर्तमान आचार्य की कृपा से सहजानंद स्वामीकी एकबार पहचान हो जाय तो दूसरे की बराबरी करने का प्रश्न ही नहीं उठेगा ।

"मारो या तारो, मारो तो बस एक सहजानद स्वामी । जसदण का नाजा जोगिया जैसे भक्त की भावना सहजानंदीय भक्त में होती है ।

मीराबाई की तरह "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई" इसी प्रकार श्रीहरि हमारे इष्टदेव दूसरो न कोई । ऐसी प्रतीति यदि हो जाय तो उस अलौकिक स्वरूप को भूलना कठिन होगा । श्रुति में भी उन्हे "एकमेव" अर्थात् एक ही कहा गया है । इनकी अन्यत्र कहीं जोडी नहीं मिलेगी । यें तो परमात्मा हैं जहाँ जिस रूप में दिखाना है उस रूप को वहाँ प्रकट कर लेते हैं । इसलिए इन्ही के सभी अवतार हैं । जैसे श्रुति "एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म" कहती है । उन्ही भक्ति धर्मपुत्र श्री सहजानंद स्वामी में इतना निश्चय करना है । भविष्य में चाहे जितने अवतार हो, भूत काल में चाहे जितने अवतार हुए हैं वे सभी भगवान स्वामिनारायण के अवतार हुए है । इसी को स्पष्ट करते हुए स.गु. निष्कुलानंद स्वामी लिखते हैं ?

आध्यमध्य अंते अवतार, थया
अगणित थशे अपार ।
पण सर्वे ना कारण जेह तेतो
स्वामी सहजानंद एह ॥
(अवतार चिन्तामणी-३२)

परोक्ष में सभी जानते है कि एकमात्र कोई भगवान है लेकिन स्वामिनारायण भगवान है ऐसा नहीं जानते । परोक्ष धर्म में तथा स्वामिनारायण धर्म में एकमात्र यही अंतर है । यह सूक्ष्म अंतर श्रीहरि तथा श्रीहरि के आश्रित जो संत उनकी कृपा के विना पहचानना संभव नहीं । यहीं पहचान हो जाय तो सर्व कार्य सरल हो जाय ।

श्री स्वामिनारायण भगवान का इस पृथ्वी पर प्रादुर्भाव का मुख्य कारण यह था भगवान जैसे है वैसे ही स्वरूप में जीव को मोक्ष प्रदान करना । इहलौकिक पार लौकिक सुख प्रदान करना। इस एक बात कों समझाने के लिए अक्षरधाम से इस अवनी पर पदार्पण किये थे ।

उस नारायण को प्रसन्न करने के लिए रातदिन जागते हैं । कीर्तन करते हैं, नाम स्मरण करते हैं । रात दिन कथा-वार्ता करते-कराते हैं । वह यदि इन सभी के करने से एक समय होजाय तो इतना परीश्रम क्यों करते । इस लिए नारायण तो नारायण ही हैं । "एक मेवाद्वितीयं ब्रह्म यह सभी शास्त्रों का सिद्धान्त है ।" (लोया-१३)

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति स्वयं पुरुषोत्तम नारायण भी नारायण ही हैं । इसी को समझाने के लिए इतना पुरुषार्थ करना पडा है । इसलिये भगवान स्वामिनारायण को सर्वोपरि समझकर उन्हीं की शरण में जाना चाहिए । मात्र वे ही एक हैं ऐसा मानकर उन्हीं की उपासना करनी चाहिए । यथार्थ रूप से समझकर कि परमात्मा तो एक ही होते हैं दो नहीं इसका विचार भी आना चाहिए तभी अपना सत्संग सच्ची दिशा में जा रहा है यह मानना होगा ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रूपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

विशेष नियम विशेष कृपा

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

मस्तक पर मनोहरी जटा शोभीत है । कंठ में शालीग्राम का बटुवा आभूषणो के स्थान पर है । हस्तकमल में गुंज की मेखला और कमंडलु, पालास का दंड, जपमाला धारण की है । भीक्षापात्र तथा शास्त्रके सार का छोटा सा पुस्तक कंधे पर है वैसे बटुकवर्णी जैसे की धरतीमाता की युगो युगो की तृषा को तृप्त करने खुले चरण आगे बढ रहे है । धरती माता के एक कदम को धारण कर अपने आपको धन्यभागी बना रही है ।

अति दिव्य, प्रतापी, तेजस्वी, कल्याणकारी, शांत बटुक तपस्वी उत्तर दिशा में आगे बढ रहे हैं । भयंकर जंगलो की धाटी, जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुंचता, वैसे रास्ते तथा शेर, वराह, हाथी, गेंडा, रींछ, शियार, वानर इत्यादी हिंसक जानवरो की आवाज तथा आवन-जावन के बीच निर्भय हो कर चलते इस तपस्वी के आगे एक बडा काला पहाड आया । बडी-बडी शिलाओ से आगे बढे तो श्वेतेगीरी आया । जैसे दुध से अभिषेक किया हो ! दूर से दिखाई देता पहाड पार कर चले जाते है । तो आगे रास्ता बंध । दो बडे पहाड के शिखर एक दूसरे से सट कर खडे थे और बीच की गुफा में से पानी का प्रचंड प्रवाह बह रहा है । इस प्रवाह के सामने तपस्वी चलने लगे । आगे मार्ग मिला वह रास्ता हिमालय के १४,००० फूट उंचाई पर आये पुलहाश्रम पहुंचे । कई कष्टो को दु:खो को सहन कर कई दिन बाद तपस्वी हिमालय के अति दिव्य पवित्र शांत तथा रमणीय पुलहाश्रम पहुंचे ।

मित्रो ! इस तपस्वी को पहचाना ? अभी भी नही पचाना तो पहचान लो ! ये तपस्वी दूसरा कोई नही । अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगावनने वर्णी के स्म में तपस्वी वेश धारण कर चातुर्मास के चार महिने तक कठोर तप किया । दो हाथ उपर कर एक चरण पर खडे हो कर इंतनी कठीन तप कीया जीसका वर्णन मुमकीन नही है । उन्हे देख कर दूसरे तपस्वी हेरान हो गये । और सोचने लगे ऐसा तप मनुष्य नही केवल परमात्मा ही कर शकते है ।

प्रभु की तपश्चर्या देख उनके साथ दिव्य स्वस्म में रहे धर्मदेव तथा भक्तिमाता चिंतातुर हो गए । प्रभु का शरीर एकदम दुर्बल हो गया था ।

"देह दुर्बल देख्यु नजाय,
रति रुधिर नही तनमांय ।
अंगो अंगोनी ने सर्वे नाडी,
ते तो थई रही छे उघाडी ॥"

हिमालय के उचे शीखर पर कातिल ठडी में प्रत्येक दिवस गंडक्री नदी में स्नान कर एसा तप हमारे सुख के लिए तथा उपद्देश के लिए पुलहाश्रम में चातुर्मास के चार महिने तप किया । फिर आगे बढे ।

मित्रो ! इसी चातुर्मास के चार महिने में भगवानने स्वयं एसा तप किया तो हम क्या करेंगे ?चिंता मत किजीये । यदि हम पुलहाश्रम तप करने नहीं जा शकते तो घर बैठकर भगवान प्रसन्न हो ऐसा तप करे ।

तो सुनो, अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में चातुर्मास में विशेष नियम लेने की आज्ञा की है तथा उसमें खुद श्रीजी महाराज द्वारा दिए गये आठ नियमो से कोई एक निमय श्रध्धापूर्वक स्वीकार्य करेंगे तो प्रभु प्रसन्न होंगे ।

याद रखो ! विशेष नियम के बगैर - चातुर्मास व्यर्थ नही जाना चाहिए । विशेष नियम धारण करता है उन पर भगवान की विशेष कृपा होती है ।

•

हरि का मार्ग शूरवीर का

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

जिस प्रकार जगत के प्रत्येक कार्य में शूरवीरता चाहिए उस प्रकार भक्तिमार्ग में भी शूरवीरता जरुरी है ।

इसलिए भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में कहा है "भगवान के भक्तो को पवित्रता तथा शूरवीरता रखनी चाहिए" और ब्रह्मानंद स्वामीने कहा है की -

"हरिजन साचार रे जे उर मां हिंमत राखे ।"

जिसे भगवानकी भक्ति करनी हो उसे लोकलाज से नही डरना चाहिए। कैसे भी विध्न आये जो अपनी भक्तिन न छोडे उसी को शूरवीर भक्त कहते है । इसिलए कहा गया है - "हरिनो मारग छे शूरानो नही कायरनुं काम छे जोने" तो, मित्रो ! एक शूरवीर भक्त की बात याद करते है ।

आज से देढ सो वर्ष पहेले की एक धटना है । भगवान पर जींदगी न्योछावर करदे ऐसे भक्त की बात है। ऐसे भक्तो की बात सुनने वाले को एसा लगेगा की सिर्फ कंठी पहनने से सत्संगी नही बना जाता, जिनेक जीवन में सत्य नहीं है, निष्ठा शूरवीरता नही उन लोगो के लिए सोचने वाली बात है ।

सौराष्ट्र की यह बात सुनीये बाप बेटे के बीच हुई घटना है । दुःख सिर्फ प्रहलादजीने ही नही सहे थे । उनके जैसे भक्त आज भी है धरती पर है । उस प्रकार हिरण्यकश्युके भी वंशज भी है । कहावत है "भक्त वहाँ भगवान" जहाँ भगवान के भक्त है वहाँ भगवान रहते हैं किंतु असुर भी भक्तो को परेशान करने आ जाते है।

एक किसान का बेटा १४ वर्ष की उम्र का था । गाँव में संत आते, भजन-भक्ति करवाते । इस लडके को भी किसी संत का संग हो गया। भजन-भक्ति पसंद आने लगी । तन्मयता आ गयी कुछ समय पश्चात वर्तमान धारण कर सच्चा सत्संगी बन गया । प्रत्येक दिन जल्दी उठता और पूजा पाठ करता । स्वामिनरायण ..... स्वामिनरायण... स्मरण उंचे आवाज से करता । घरमें प्रत्येक कार्य में मदद करता । एसे सुंदर गुण वाले पुत्र के पिता को उसकी भक्ति पसंद नही आयी । यह सब क्या है ? सुबह से उठता तबसे सोने तक परेशान कर देता है । बंध कर ये सब । तो वह बोलता पिताजी ये नही बंध होगा, भजन जीवन के साथ जुड गया है । बाप ने कहा अब बोला तो जीभ खीच लुंगा । आप जीभ खीच लेगें तो मनमें बोलुंगा पर नहीं छोडुंगा ।

बेटे के एसे वचन सुन कर बाप के मन में काल आ गया । मेरे सामने बोलता है । असुर जैसे पिता की बेटे की भजन-भक्ति पसंद नही थी । वो देख गुस्सा होता ।

ये बालक १४ वर्ष का था इसलिए खेती के तथा अन्य काम खूब करता इसके बावदुज उसके पिता को उसका भजन परेशान करता ।

एक दिन दोनो साथ में खेत गये। वहाँ दूसरा कोई नही था । बेटा धून बोलते हुए काम करता जा रहा था । तभी पिताने गला दबा कर कहा बंध कर ये सब । ना पिताजी ! ये बंध नही होगा, प्राण चले जाय पर सत्संग नही जाएगा आप कुछ भी करो मैं भगवान की पूजा करुंगा । उसका पिता उसे खीच कर बैल गाडी के नीचे रख गाडी चला दी । गला दब जाने से वह लडका वहीं मर गया । इष्टदेव के नाम पर अपनी जींदगी न्योछावर कर दी । शहीद हो गया लेकीन भक्ति भजन नहीं छोडा । ऐसे भक्तो पर भगवान हंमेशा प्रसन्न रहते है ।

इसलिए मित्रो ! हमे भी इस भक्त के जैसा बनना है और शूरवीर भक्त बनना है क्योकी "हरिनो मारग छे शूरा नो, नही कायरनुं काम जो ने !"

पृष्ठ १५ से आगे

वाणी का श्रृंगार ही सच्चा श्रृंगार

को पार साक्षात सरस्वती भी नहीं कर सकीं । इसीलिये तो बीच में डूबजाने के भय से छाती पर हर वक्त वीणा धारण करती है ।

सद् वाणी द्वारा बोला जाता हुआ शब्द सूई का काम करता है । जबकि कटुवाणी द्वारा बोला जाता शब्द कैंची का काम करता है । इसलिये आवश्य कतानुसार ही बोलना चाहिए। संसार को मधुर खीर जैसे बनाना हो तो जहाँ तक हो सके मौन रहो । जैसे कमान में से छूटा हुआ तीर वापस नहीं आता, वैसे ही एकबार उच्चरित शब्द वापस नहीं आता । इसलिए मौन आचरण सर्वोत्कृष्ट कहा जा सकता है ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में गुरुपूर्णिमा महोत्सव वेदपरंपरा से शास्त्रोक्त विधि से भव्य रूप से संपन्न हुआ था।

श्री नरनारायणधेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री लंडन के धर्मप्रवास में गए थे उनके स्थान पर भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराश्री सभा में पधारे थे। उनका सर्व प्रथम विद्वान पंडितो ने स्वस्ति वाचन कर वेदविधि पूर्वक पूजन किया था। पश्चात अहमदाबाद, मूली और भुज के संत-हरिभक्तोने बडी संख्या में दर्शन पूजन चरण स्पर्श का लाभ लिया था। इस सभा में प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का भी हरिभक्तों ने चरण स्पर्श किया था। प.पू. लालजी महाराजश्री के दर्शन के लिए लंबी-लंबी तथा पूजन दर्शनार्थियों की कतार लगी थी। दूर-दूर से हरिभक्त अपने धर्मगुरुका आशीर्वाद लेने आये थे। यहाँ आशीर्वाद लेकर शाश्वत शांति का अनुभव करते थे। महंत स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से कोठारी स्वामी और स्वा. सत्यप्रकाशदासजी आदि संतो ने तथा स्टाफने सुंदर सेवा की थी। - *विनोद पटेल*

भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री का ८वाँ जन्मदिवस धामधूम से मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के ८वे वंशज तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पुत्र रत्न प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ८वाँ जन्मोत्सव अषाढ वद-१५ने परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में पवित्र सभा मंडप में धामधुम से मनाया गया था।

श्री नरनारायणदेव की शृंगार आरती के बाद प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री सभा में बिराजित हुए थे। सर्वप्रथम विद्वान पंडितोने वेद के मंत्रोच्चार से स्वस्तिवाचन किया था। पश्चात जयेश सोनी ने जन्मोत्सव का सुंदर कीर्तन गान किया था। असारवा गुरुकुल के बालकोने सुंदर राश खेला था। जिससे इस जन्मोत्सव का आनंद बढ गया था।

पश्चात भावपूर्वक प्रवचन कर सभी संतो ने लालजी महाराजश्री को जन्मदिवस की शुभेच्छा दी। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने अंतर से आशीर्वाद दिये थे। अनेक संतो हरिभक्तों ने सुगंधित पुष्पहार पहनाकर धन्यता का अनुभव किया था। जन्मोत्सव पर पू. महंत स्वामी की आज्ञा से कोठारी स्वामी तथा स्वा. सत्यप्रकाशदास और संत मंडल, कोठार के स्टाफ ने सुंद सेवा की थी। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदल सेवा की थी। - *स्वा. सत्यप्रकाशदास*

अहमदाबाद मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के हिंडोला का दर्शन

अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक हिन्दू धर्म में सभी मंदिरो में भगावन को विविध हिंडोला में झुलाया जाता है। यह दर्शन बहुत सुंदर लगता है। अहमदाबाद शहर के सुप्रसिध्ध श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव अषाढ वद-२ से विविध फुट, शब्जी, काजु, बादाम, फूल, गेहूं, चावल आदि का हिंडोला बनाकर भगवान को झुलाया जाता है। जिसका दिव्य दर्शन कर भक्तजन भाव विभोर बन कर तन्मय हो जाते है। पू. महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी की प्रेरणा से हरिभक्त यजमान बन कर दिव्य लाभ ले रहे है। कोठारी स्वामी सत्यप्रकाशदास तथा संत मंडल और कोठारके स्टाफ युवान हिंडोला की सेवा कर महाराज को राजी कर रहे है।

अहमदाबाद शहर के हरिभक्तों आप सभी सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के हिंडोला का दर्शन के लिए नित्य न आये तो प्रतिपदा और एकादशी को जरुर आवे। ऐसे दिव्य दर्शन याद रह जाए तो बेडा पार हो जाता है। - *कोठारी धर्मप्रकाश*

जेतलपुर मंदिर में भव्य कलात्मक रेशम हींडोला दर्शन

सर्वावतारी श्रीजी महाराज के चरणो से पवित्र दिव्य भूमि जेतलपुर धाम में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के समीप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से पवित्र श्रावण महिने में ६-८-०५ से ३-८-०५ पर्यन्त रेशम के रंगबीरंगी सुंदर कलात्मक हींडोला के दर्शन करवाने का आयोजन किया है। तो प्रत्येक दर्शनार्थी इस अवशर का लाभ ले। - *महंत स्वामी कृष्णप्रसाददास, जेतलपुर*

ऊझां (ब्राह्मणशेरी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य हिंडोला महोत्सव

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में हिरभक्तों ने ठाकुरजी के समक्ष भव्य होडला का आयोजन किया गया है। जिसका शुभ आरंभ दि. २-८-०५ को प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीके शुभ हस्तो से संपन्न हुआ हिंडोला के दर्शन दि. २-८-०५ से ३०-८-०५ पर्यन्त होंगे।

आबुरोड श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड. कोलेज को खुलते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से आबुरोड श्री स्वामिनारायण आश्रम के संचालक कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा कोठारी स्वामी आनंदप्रसाददासजीकी प्रेरणा से राजस्थान आबु रोड की अत्यंत सुंदर विशाल भूमि पर श्री स्वामिनारायण

आश्रम कुछ वर्ष पूर्व शुरु किया गया है। जहाँ स्कूल कोलेज का निर्माण तथा धर्मार्थ औषाधालय का निर्माण का सुंदर क्षेत्र का निर्माण पूर्व होते वास्तुपुजन महापूजा तथा श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड. कोलेज का उद्घाटन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से संपन्न हुआ था। तथा श्री स्वामिनारायण सत्संग होल का भूमि पूजन तथा वृक्षारोपण प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ हस्तो से हुआ था। इस अवशर पर अमदाबाद मंहत, पू. पी.पी. स्वामी आदि विद्वान संत उपस्थित थे। जिस में स्थानिक हरिभक्तोने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन कर आरती उतारी थी। पुस्तकालय के होल में सुंदर सभा का आयोजन किया था। जिसमें विद्वान संतोने यहाँ प्रेरक शिक्षण के साथ संस्कार सिंचन की प्रवृत्ति के लिए भावना व्यक्त की थी।

प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए यहाँ के शिक्षण संकुल में गुजरात और राजस्थान के बालक अभ्यास के साथ संप्रदाय के उत्तम संस्कार प्राप्त कर अच्छे नागरिक बने ऐसे आशीर्वाद दिए थे। अंत में आभार विधि कांकरिया महंत तथा प.भ. शंकरभाई पटेलने की थी।

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड. कोलेज का निर्माण धांगध्रा के (अभी दिल्ही) अ.नि. प.भ. मोहनभाई पानाचंद गांधी के स्मरणार्थ किया जा रहा है तथा धर्मार्थ औषधालय का निर्माण अ.नि. हसमुतीबहन वाडीलाल मोदी के स्मरणार्थ श्री कमलेशभाई वाडीलाल मोदी (पटाकेवाले) की तरफ से किया गया है। इस अवशर पर हजारो भक्तो को प्रसादका सुंदर आयोजन किया गया था। यहाँ पर रहते प.भ. नटुभाई चावला के यहाँ प.पू. आचार्य महाराजश्री ने पधरामणी की थी। कष्टभंजन पाठ मंडल द्वारा हनुमान चालीसा का आयोजन किया गया था।

- आनंद स्वामी

श्री स्वामिनारायण विविध सेवा निकेतन जेतलपुर

श्री रेवती बलदेलजी हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्यमें जेतलपुर में श्री नरनारयणदेव के हस्तक श्री स्वामिनारायण गुरुकुल कई वर्षो से उच्च शिक्षण के साथ संस्कार सिंचन का उत्तम कार्य करते हैं। गये २००४-०५ में धो. १० का परिणाम १००% आया, नरनारायण शास्त्री पी.टी.सी. कोलेज का प्रथम वर्ष का ९९% तथा द्वितीय वर्ष का ९९% आया है तथा श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड. कोलेज २००४-०५ का ९९% परिणाम आया है।

उपरोक्त परिणाम जानकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने गुरुकुल संचालक तथा अध्यापकगण को आशीर्वाद सह अभिनंदन दिया था। गुरुकुल में १२०० विद्यार्थी के.जि. से बी.एड. तक शिक्षण दिया जाता है। जेतलपुर मंदिर में महंत शा. आत्मप्रकासदासजी तथा शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजीने नेतृत्व में संचालन होता है। *- प्रिन्सिपाल दिनेशभाई पटेल*

नारायणघाट मंदिर में यज्ञ शाला का उद्घाटन

अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे आये हुए अपने पवित्र तीर्थभूमि नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर के विशाल प्रांगण में हरिभक्तो की जरुरत को ध्यान में रखकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-प्रेरणा से एक सुंदर यज्ञशाला का निर्माण किया गया था। दि. १४-७-०५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से उद्घाटन किया गया था। इस अवशर पर यहाँ के महंत घनश्यामप्रकाशदासने नारायणघाट मंदिर का महिमा तथा इस अलौकिक तीर्थ में कर्मकांड पूजा-यज्ञ का त्वरित फल मिलता है ऐसा अपने प्रवचन में कहा था। प.पू. आचार्य महाराजश्री यज्ञशाला में यज्ञोपवीत धारण करने वाले ब्राह्मणो को आशीर्वाद दिए थे। *- साधु पूर्णप्रकाशदास*

नारायणपुरा (ता. कडी)

यहाँ नारायणपुरा गाँव के अ.नि.प.भ. किशोरभाई झवेरभाई पटेल के यहाँ श्रीजी महाराज की प्रसादीकी अलौकिक चीजे परंपरासे उनके पास थी। उनके परिवारने यह श्री स्वामिनारायण म्युझियम में देने का संकल्प किया। और प.पू. बडे महाराजश्री को यहाँ पधारने की प्रार्थना की। और प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ज्येष्ठ सुद-१५ को यहाँ पधारे थे। जहाँ मंदिर में दर्शन कर आरती उतारकर सभा में पधारे थे। सभा में गाँव के सभी हरिभक्त ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किए थे। तथा सभा में अ.नि.प.भ. किशोरभाई झवेरभाई पटेल (चोपडा) के समस्त परिवारने चरणारविंद, नाखून केश, मळके की पेटी आदि श्रीजी महाराज की प्रसादी की चीज अर्पण की, प.पू. महाराजश्रीने उस सभी परिवार को प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिए थे। समग्र प्रसंग में हिमतनगर के महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी प्रेरक रहा था।

- पा. घनश्याम भगत

खेरोल (हिंमतनगर) सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामीकी प्रेरणा से यहाँ के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल खूब सक्रिय रह कर प्रवृत्ति करता है। हर रिवार को शामको ५-३० से ७-३० तक भजन कीर्तन कथा को प्रवृत्ति होती है। प्रत्येक एकादशी को हरिभक्तो के यहाँ सभा की जाती है। उसी प्रकार खेरोल गाँव में प.भ. राजीवभाई यहाँ अ.नि. राजुभाई की मासीक पुण्य तिथी के अवशर पर सत्संग सभा रखी गयी थई। वहाँ मंदिर में ज्येष्ठ सुद-१५ को सभा की गयी धी। जिस में घनश्याम भगतने नंद संतो के कीर्तन गाये थे। महंत स्वामीने श्रीहरिकी महिमा तथा धर्मकुल का महिमा बताकर शुद्ध तथा मूल संप्रदाय के प्रति आस्था रखने की बात की।

- घनश्याम भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बडे महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से यहाँ के महंत स्वामी

हरिवल्लभदासजी की प्रेरणा से वैशाख सुद-३ को श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव तथा श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन की पंचदिनात्मक पारायण शा.व्रजवल्लभदास के वक्तापद पर हुई थी ।

ज्येष्ठ सुद-१३ ता. २०-६-०५ को शुभ दिवस पर श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री हरिकृष्ण महाराज का दिव्य अभिषेक तथा त्रिदिनात्मक व्याख्यान माला का आयोजन किया था । गाँव और अगल-बगल के गाँव के भक्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूप गादीवाला तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त कर धन्य हुए थे । अभिषेक तथा कथाका आयोजन सांख्योयगी रईबाने किया था ।

- सुव्रत स्वामी

इडर मंदिर का पाटोत्वस सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा इडर मंदिर के महंत जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री गोपीनाथजी, हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ । जेठ शुक्ल १२ के दिन प्रातः पू. महाराजश्री के वरद हस्तो से गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज आदि देवो की अभिषेक विधि हुई थी । बाद में बिमारी से पिडीत करशनभाई कुबेरभाई पटेलकी खबर लेने पधारे ।

पाटोत्सव के यजमान डुंगरी के श्री अमीचंदभाई सांकाभाई पटेल सपरिवार महाराजश्रीकी आरती पूजा करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । सभा में सर्वप्रथम इडर के महंतश्रीने पू. महाराजका पूजन किया । सभा संचालन शा. हरिजीवनदासजीने इडर मंदिर का परिचय दिया । बाद में धोलका, मूली, हिम्मतनगर, सोकली से आये हुए संतोने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इसके बाद लालोडा, टोरडा, लेई अमदावाद मंदिरो के मंहत संत उपस्थित थे । पू. महाराजश्रीने आशीर्वचन में बताया कि अमदाबाद के संत हमारी आज्ञा हो तो ब्रह्मानंद स्वामी की तरह महंत पद का त्याग कर देंगे ऐसे निस्पृही है । यहाँ इडर मंदिर से प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गुजरात पूरपीडितों को सुखडी तथा सेवका पैकेट बनाकर जिला कलेकटर को वितरण हेतु दिया गया था ।

- साधु सत्यसंकल्पदासजी इडर

सिध्धपुर मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर में बीराजमान श्री धर्मभक्ति, हरिकृष्ण महाराज का १४२वाँ पाटोत्सव ज्येष्ठ सुद-११ को मनाया गया । इस अवशर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने करकमलो से ठाकुरजी का महाअभिषेक वेदविधिपूर्वक किया गया । जिसके दर्शन हजारो भाविक ने कर धन्यभागी हुए । प्रासंगिक सभा में यजमान प.भ. नविनचंद्र नानदास पटेल तथा प.भ. बाबुभाई तथा प.भ. महेशभाई जीवाभाई ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्जन कर आशीर्वाद प्राप्त किए थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने महापूजा की पूर्णाहुति कर अन्नकूट की आरती उतारी थी । जिसमें कई स्थानो से हरिभक्त दर्शनार्थ आये थे । समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सुंदर आशीर्वाद दिए थे । यहाँ के महंत स्वामी भक्तप्रियदासजीने सुंदर व्यवस्था की थी ।

- साधु बालमुकुंददास

शिरोही (राजस्थान)

यहा गुस्मूर्णिमा धामधूम पूर्वक मनाया गया था । मंदिर में सभामें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन-अर्जन कर आरती उतारकर गुस्मूजन किया था । स्वामी अक्षरविहारीने गुस्महिमा बतायी थी । *- कोठारीश्री शिरोही*

श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण

यहाँ के मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गुस्मूर्णिमा को महापूजा का आयोजन किया गया था । महापूजा मंदिर के पूजारी शास्त्री जसुभगत ने करवाई थी । सुबह ७ से १० पर्यन्त विधि चली थी । महापूजा के यजमान पद पर प.भ. माणेकलाल नरसिंहदास महेता उपस्थित रहे थे । करजीसण गाँव में श्री स्वामिनारायण भगवान ३६ बार पधारे थे । ये गाँव दंढाव्य प्रदेश का महान प्रसादी स्थान है । यहाँ अपना विशाल मंदिर निर्मित हुवा है । प.भ. प्रहलादभाई (न्युजर्सी) तथा अन्य हरिभक्तोने मंदिर के लिए बडी सेवा की थी । प्रत्येक हरिभक्तोने यहाँ दर्शन करना चाहिए । *- पार्षद जसुभगत*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से गुजरात के बाढ पीडीतो को फूड पेकेट बांटे

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी की प्रेरणा से मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से गुजरात में अतिवृष्टि वाले खेडा, नडीयाद तथा आणंद मे पुरी, शब्दी, सेव तथा सुखडी के पेकेट बनाकर बडी संख्या में सुरेन्द्रनगर जिले के कलेकटरश्रीको बाढ पीडीतो वितरण हेतु दि गई ।

- महंत स्वामी नरेन्द्रप्रसाददास

मूली मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

झालावाड प्रांतके स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी निर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में गुस्मूर्णिमा को मंदिर के दिव्य सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अपने गुरुब्रह्मानंद स्वामी का पूजन सर्वोपरी घनश्याम महाराज के सांनिध्य में वेदविधि पूर्वक धामधूम से संपन्न हुवा । जिसमें सुबह ७-३० से ९-०० महापूजा, ९-०० से १०-०० सत्संग सभा, १०-०० से १०-३० तक गुस्मूजन सुंदर प्रकार से धामधुम से हरिभक्तोने उपस्थित रह कर किया था । स.गु. लक्ष्मीप्रसाददास की प्रेरणा मार्गदर्शन से समग्र कार्यक्रमो का आयोजन महंत स्वामी

नरेन्द्रप्रसाददासजी तथा कोठारीने किया था। - *भरत भगत*

सुरेन्द्रनगर बहनो के मंदिर का पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवाला की आज्ञा से तथा सां. कमलाबा की प्रेरणा से अषाढ सुद को मंदिर का पाटोत्सव धामधुम से मनाया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में दि. ४-७-०५ से दि. ९-७-०५ पर्यन्त निष्कुलानंद काव्य की पारायण सां. कोकिलाबा के वक्ता के स्म में हुई थी। पाटोत्सव के शुभ दिवस पर बहनो की समूह महापूजा, अभिषेक, अन्नकुट का आयोजन किया गया था। सां. उषाबा ने सुंदर सेवा की थी।- *शैलेन्द्रसिंह झाला*

चराडवा मंदिर द्वारा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर चरडावा में इस प्रकार से हरिभक्तों के यहाँ सभा रखी गयी थी। दि. ४-५ को प.भ. गोकळभाई जेरामभाई, २०-५ को प.भ. धरमशीभाई डाह्याभाई, २-६ को श्री कल्याणभाई वांचाभाई, १६-६ को श्री हितेशभाई के यहाँ धून-कीर्तन-भजन आदि समूह में कराये गए। सभा में संतोने प्रेरक प्रवचन दिए थे।- *जयेशभाई सोनाग्रा न.ना.देव युवक मंडल*

धांगधा संस्कारधाम में गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण संस्कारधाम गुरुकुल में दि. २१-७-२००५ को गुस्मूर्णिमा के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा का पूजन कर हरिभक्तो-संतो तथा विद्यार्थीयोने गुरु ऋण अदा किया था। संचालक स्वामीश्री रामकृष्णदासजीने धर्मगुरु का पूजन गुस्मूर्णिमा को करना चाहिए ये बात शास्त्र के मुताबिक बतायी थी।

- *अनिलभाई दुधरेजीया*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

फ्लोरीडा लेकलेन्ड में (I.S.S.O. द्वारा) स्थापित नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा निवृत प.पू. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ संकल्प से तथा हरिभक्तो के साथ सहकार से फ्लोरीडा में I.S.S.O. नूतन मंदिर पूर्ण होते ही दि. ३-७-०५ को मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत् पंचान्ह पारायण श्री विष्णुधाम का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री दि. २८-६-०५ को संत मंडल के साथ पधारे थे। तब यहाँ के हजारो हरिभक्तोने महाराजश्री का स्वागत धामधुम से किया था। दि. २-७-०५ को १-०० बजे ठाकुरजी की तथा पू. महाराजश्री की शोभा यात्रा फ्लोरीडा के राजमार्ग पर नीकली तब शोभायात्रा में उपस्थित हरिभक्त भाव विभोर होकर स्वामिनारायण महामंत्र की धून बोलते पटाके के आवाज के साथ भक्तिमय वातावरण में थे जिसमें इददेव को भी हीस्सा लेना हो वैसे बारीस गीरने लगी। इस प्रसंग पर साक्षात श्रीजी महाराज के अपर स्वस्म ने उपस्थिती देकर तथा सुंदर वातावरण बनाकर इन्द्रदेव अदृश्य हो गए। युवानो-बालको के मन अति प्रफुल्लीत बन गए थे।

दि. ३-७-०५ को प्रातः इस भव्य मंदिर में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के करकमलो से राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव के स्वस्मो के अंगन्यास, नेत्रोन्मिलन तथा शिक्षापत्री की आज्ञा के मुताबिक प्राण प्रतिष्ठीत कर के आरती उतारी थी। जिनके दर्शन के लिए फ्लोरिडा के भक्त वर्षो से तप करते थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यज्ञ तथा कथा पारायण की पूर्णाहुति की थी। प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने मूर्ति प्रतिष्ठा का महत्व, महात्म्य तथा धर्मवंशी आचार्य द्वारा प्रतिष्ठीत मूर्ति में साक्षात् वसते है ये दृष्टांत के साथ बताया। अंत में आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने कहा लोग कहते थे की इन लोगो से (संख्या कम होने के कारण) मंदिर नही बनेगा। किन्तु पू. पिताश्री (प.पू. बडे महाराजश्री) का संकल्प था तो परिपूर्ण तो होगा ही!

इस अवशर पर अपने न्यूजर्सी, एल.ए., ह्युस्टन, बोस्टन, शिकागो, डेट्रोईट मंदिर के महंत स्वामी शा. धर्मवल्लभदासजी, शा. माधव स्वामी, शा. हरिप्रकाशदास, शा. हरिप्रियदास तथा अहमदाबाद से पधारे शा.स्वा. पूर्णप्रकाशदासने प्रवचन से सभा को आनंदित किया था।

इस प्रसंग में स्वामी धर्मस्वस्मदासजी (श्रीनाथजी महंत), साधु जयकृष्णदासजीने खूब श्रध्धा भक्ति के साथ सेवा कर के प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रशन्नता प्राप्त की। कथा पारायण के वक्ता शा. योगेन्द्रभाई भट्टने सुंदर मधुर कंठ से कथा रस का पान करवाया। सभा संचालन महंत शा. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (महंत फ्लोरीडा) ने किया था। अनेक स्थान से धर्मप्रेमी भक्तोने पधारकर दर्शन का लाभ लिया था। यहाँ के समाचार पत्रो में ये समाचार प्रसारीत हुए थे। इस प्रकार यहाँ मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर देव, आचार्य के दर्शन तथा कथामृत लाभ लेकर धन्य हुए थे।

- *प्रमुखश्री मणीभाई पटेल*

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में विविध उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से तथा महंत शा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से शिकागो मंदिर में विविध उत्सव धामधुमपूर्वक मनाये जाते है। ज्येष्ठ सुद-१० को श्रीजी महाराज के अंतर्धान तिथी के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून तथा सत्संग

सभा, भक्ति चिंतामणी ग्रंथ के श्रीहरि धाम गमन प्रकरण की कथा का सार समझाते हुए महंत स्वामीने कहा जो श्रीहरि की आज्ञा का पालन करेगा उसका कल्याण निश्चीत ही है । तथा मूल संप्रदाय की परंपरा समझायी थी । हरिभक्तोने भावपूर्वक कथा का श्रवण कर प्रशन्न हुए थे ।

- पूजारी हरिनंदनदास

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिग्टन I.S.S.O. चेप्टर)

यहाँ १८ जुन शनिवार शाम को ३ घंटे सभा में भजन-कीर्तन, वचनामृत, थाल, आरती तथा नित्य नियम हरिभक्तो ने साथ मिलकर किया था । सभा में कई हरिभक्त ने लाभ लिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है ।

- कनुभाई पटेल

प.पू. लालजी महाराजश्री के जन्मदिवस पर ब्लड डोनेशन केम्प

प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के जन्मदिवस पर दि. ३०-७-०५ को कांकरिया मंदिर बाग कष्टभंजनदेव के सांनिध्य में रेडक्रोस ब्लडबेंक द्वारा ब्लड डोनेशन केम्प का आयोजन किया गया था । जिस में कई रक्तदाता ने ब्लड डोनेट किया था । आयोजक श्री स्वामिनारायण मंदिर, कांकरिया, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल रहा था । तथा व्यवस्था डॉ. रमेशभाई परीखने की थी ।

- आनंद स्वामी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का यु.के.का धर्मप्रवास

ईग्लेन्डमें सर्वप्रथम अपने मूल संप्रदाय को मंदिर लंडन विल्सडन लेन में आजसे ३० वर्ष पूर्व अपने प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से निर्मीत हुवा तब से आज तक सत्संग का विकास होता रहा है । जिस का पुनः निर्माण कर इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरुप घनश्याम महाराजश्री की मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद अक्षरधाम समान अपने मंदिर में सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम पू. महाराजश्री तथा संतो की उपस्थिति में होते है । वैसा ही एक और दिव्य अवशर पाटोत्सव के रुप में हुवा था। जिस में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी पीठाधिपति के स्थान पर विराजमान होने के पश्चात पधारे थे । और सातो दिन मंदिर में श्रीमद् सत्संगीजीवन सप्ताह पारायण में दोनो समय सुबह-शाम दर्शन दे कर सत्संग समाज के अत्यंत आनंद दिया था । श्रीहरि के दिव्य लिला चरित्र श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र में दिव्यवाणी से अमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा भुज मंदिर के संतो ने सुबह शाम कथा का रसपान कराते थे । श्रोताजन मे भक्तिभावपूर्वक श्रध्धा से आनंद पूर्वक सुन रहे थे ।

गुरुपूर्णिमा के पवित्र दिन इष्टदेव भगवान श्री बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की दिव्य मूर्ति प्रतिष्ठा षोडशोपचार पूर्वक पूजन विधि तथा महाअभिषेक के दर्शन सभी हरिभक्तोने किए ते । जिस में पू. महाराजश्री ने विविध रसो से तथा केसर मिश्रीत जल से अभिषेक किया था ।

शाम की सभा में गुरुपूर्णिमा का अलौकिक महिमा संतो ने कहा था । तथा श्रीहरि द्वारा गुरु स्थान पर दिये हुए अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री विधिपूर्वक पूजन लंडन विल्सडन लेन स्वामिनारायण मंदिर के प्रेसीडेन्ट प.भ. श्री मनजीभाई हालाई और संतो ने तथा हजारो हरिभक्तोने किया और आर्शीवाद प्राप्त किया था ।

सोमवार दि. १८ जुलाई से २४ जुलाई रविवार तक दिव्य मंगलमय कथा तथा कीर्तन भक्ति तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमो से मंदिर का वातावरण दिव्य अक्षरधाम तुल्य था । बुधवार २७ जुलई को पूज्य आचार्य महाराजश्री को भावपूर्वक विदाय दी । पश्चात युवको के केम्प में संत था पूज्य आचार्य महाराजश्री पधारे थे । यु.के. के हरिभक्त को अत्यंत आनंद हुवा था । सभी ने प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन-आशीर्वाद का खुब सुख लिया था ।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

नांदोल दहेगाम : अ.सौ. ज्योत्सनाबहन रमेशचंद्र पटेल दि. २८-६-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

राजकोट : प.भ. मगनभाई शांतिभाई काचा ज्येष्ठ सुद-१० को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

महेसाणा : यहाँ के बहनो के मंदिर में निष्ठवान प.भ. शारदाबहन दि. १३-६-०५ को अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

गांधीनगर : प.भ. चौधरी जेशंगभाई मोगजीभाई के मातुश्री साकुबा (मकाखाडवाला) दि. १८-७-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

वासणा : प.भ. मोदी जयंतीलाल नाथालाल (उ. ५४ वर्ष) दि. १२-६-०५ को श्रीजी महाराजका रटन करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

धांगधा : प.भ. नटुभाई शांतिलाल पूजारा के मातुश्री पार्वतीबहन शांतिलाल (उ. ९०) दि. १३-५-०५ को महाराजश्री का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

धांगधा : प.भ. धरमशीभाई हीरजीभाई कडीया के पुत्र चि. श्री भावेशभाई (२४ वर्ष) दि. १४-७-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

हरिपर (धांगधा) : प.भ. पटेल हसमुखभाई नागरभाई (३३ वर्ष) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।













१. आबुरोड श्री स्वामिनारायण आश्रम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्तो से वृक्षारोपण । २. वडु (ता. कलोल) के प्राचीन प्रसादी के श्री हनुमानजी मंदिर में खातविधि करते हुए प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री । ३. इडर मंदिर में पाटोत्सव के यजमान प.भ. अमीचन्दभाई प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करके आशीर्वाद लेते हुए । ४. संप्रदाय के नये गाँव अंबाला (ता. बहुचराजी) के नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । ५. आबुरोड श्री तेजेन्द्रप्रसादजी बी.एड. कोलेज के उद्घाटन करके सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । ६. आबुरोड गुरुकुल में औषधालय के उद्घाटन करके संत-हरिभक्तो के साथ दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।








१. पूज्य दादाजी के शुभ सांनिध्य में ८वाँ प्राकट्योत्सव के दिन सभा में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । २. लाखो जोजन दूर लंडन से आये हुए नानो बाल श्री हरेन्द्र अशोकभाई पटेल अपने प्राण प्यारे पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा देकर आशीर्वाद ले रहे हैं । ३. प.पू. लालजी महाराजश्रीनो प्राकट्योत्सव प्रसंगकी सभा में उपस्थित संत हरिभक्तो । ४. लंडन के राजमार्गो पर भव्यातिभव्य शोभायात्रा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के अलौकिक दर्शन ।

Praful Kharsani